रणमल्ल छंद

[वीररसात्मक राजस्थानी चरित काव्य]

संपादक

मूलचन्द 'प्राणेश'



प्रकाशक

भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर (राजस्थान)

भारतीय विद्या मंदिर ग्रंथमाला—७

- प्रधान संपादक
  सत्यनारायण पारीक
  संचालक भा वि म शोध प्रतिष्ठान
  बीकानेर

- परामर्श मंडल
  श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम ए
  श्री शम्भूदयाल सकसेना साहित्यरत्न
  श्री अक्षयचन्द्र शर्मा, एम ए
  श्री रामेश्वर प्रसाद पाडिया एम ए
  श्री चन्द्रदान चारण, एम ए

- प्रथम संस्करण शाके १८६४ (१६७२ ई)

- मूल्य रु० ७ ५० (सजिल्द)
  ६ ०० (अजिल्द)

- प्रकाशक
  भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान
  बीकानेर (राजस्थान)

- मुद्रक
  एजूकेशनल प्रेस बीकानेर

RANMALL CHHAND Ed by MOOLCHAND PRANESH Published by Bharatiya Vidya Mandir Shodh Pratisthan Bikaner

आभार

भारतीय विद्या मंदिर ग्रंथमाला का सातवां पुष्प रणमल्ल छंद अध्येताओं व पाठकों की सेवा में सहर्ष प्रस्तुत है। इससे पूर्व भी राजस्थान के शिक्षा विभाग व अनेक साहित्यानुरागियों के सहयोग से प्रकाशित ग्रन्थ जिस प्रकार साहित्य जगत में समादृत हुए हैं आशा है वैसे ही प्रस्तुत ग्रंथ भी स्वीकार किया जायगा।

'रणमल्ल छंद' के ऐतिहासिक, साहित्यिक सामाजिक राजनैतिक व भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की महती आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। प्रसन्नता का विषय है कि इस प्रकार का प्रथम सर्वांगीण अध्ययन 'प्रतिष्ठान' के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर
नवरात्रि स्थापना, सं० २०२६ वि०

मूलचन्द पारीक
व्यवस्था सचिव

दो शब्द

श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छन्द' के सबंध में सर्वप्रथम गुजराती में स्वर्गीय रा. ब. केशवलाल ह० ध्रुव और कन्हैयालाल मा० मुंशी ने प्रकाश डाला है। इस काव्य के साहित्यिक सौष्ठव पर जितना अध्ययन अपेक्षित था वह तब नहीं हो पाया। विश्वविद्यालय स्तर पर राजस्थानी भाषा व साहित्य विषयक शोध सभावनाए अत्यन्त विस्तृत हो गई हैं। इसी सभावना की परिपूर्ति की दृष्टि से 'प्रतिष्ठान' द्वारा 'भारतीय विद्या मदिर ग्रथमाला' के अतर्गत 'रणमल्ल छद' का सपादन कार्य हाथ में लिया गया।

वीर रणमल्ल अपने समय का महान् योद्धा था। प्रस्तुत काव्य में उसके शौर्य की गाथा अंकित है। लघुकाय खडकाव्य होते हुए भी यह पश्चिमोत्तर भारत की तत्युगीन उथल पुथल का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। केन्द्रीय सत्ता के निर्बल हो जाने की स्थिति म सुदूर प्रदेश स्थित स्थानीय उद्भट शासक किस प्रकार सत्ता के लिये सिरदर्द बन जाते थे और धर्मान्ध मुस्लिम सूबेदारों से अपनी कतिपय मानवीय मान्यताओं के लिए किस प्रकार साहस और ओवट के साथ लोहा लिया करते थे, इसका समुज्ज्वल उदाहरण वीर रणमल्ल का उदात्त चरित्र है।

फारसी तवारीखों म स्थानीय युद्धों का उल्लेख न होना अथवा तथ्यों को तोड मरोड कर प्रस्तुत किया जाना ऐतिहासिक दृष्टि से जो एक कमी है उसकी पूर्ति देशी स्रोतों से सभव है। अत ऐतिहासिक तथ्यों की परिपूर्णता की दृष्टि स 'रणमल्ल छन्द' जैसे ऐतिहासिक काव्यों का प्रकाशन, विज्ञ अध्येताओं व पाठकों के लिए आवश्यक है।

डा० रघुबीरसिंहजी ने अपनी प्रस्तावना म काव्य के ऐतिहासिक तत्वों की जो समीचीन व्याख्या प्रस्तुत की है उससे काव्य म निहित सामाजिक व सास्कृतिक अतर्धारा सुस्पष्ट हो गई है। प्रस्तुत काव्य म वर्णित प्रमुख युद्ध—रणमल्ल व जफरखां के मध्य—की सपुष्टि डा० साहब ने विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों से भली प्रकार से की है। इसके अतिरिक्त अन्य—विशेषत जफरखान प्रथम व शमसुद्दीन अबू राजा के साथ हुए—युद्धों के सबध म जो गवेषणापूर्ण अभिमत प्रकट किया है वह बडा मूल्यवान है। उनकी प्रस्तावना स सबसे बडा लाभ यह मिला है कि काव्य और उसकी विषय वस्तु के सबध म अब तक चले आ रहे मतभेदों का निराकरण हो गया है।

वयोवृद्ध डा० रघुबीरसिंहजी ने अति-व्यस्त रहते हुए भी जिस स्नेह व सौहार्द के साथ प्रस्तावना लिखने की कृपा की है, उसके लिए मैं स्वयं तथा संस्था की ओर से आभार मानता हूं।

प्रतिष्ठान' ने रणमल्ल छंद के संपादन प्रकाशन का कार्य हाथ में लेकर जो लक्ष्य-पूर्ति करनी चाही थी, उसे मूर्त रूप में देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इसमें श्री मूलचंद 'प्राणेश' का कार्य विशेष सराहनीय है। इस संबंध में समय-समय पर संस्था की विचार गोष्ठियों में सर्वश्री रामेश्वरप्रसाद पाडिया, चन्द्रदान चारण, सूर्यशंकर पारीक, माणक तिवारी 'बंधु' का उल्लेखनीय सहयोग रहा है।

भा० वि० म० शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर (राजस्थान)
नवरात्रि स्थापना, सं० २०२९ वि०

सत्यनारायण पारीक
संचालक

प्रस्तावना

पिछले तीस-पतीस वर्षों से प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय इतिहास, साहित्य संस्कृति और समाज आदि के अध्ययन की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया जाने लगा है। समूचे भारत के इतिहास समाज और संस्कृति आदि के सामूहिक विवरण की एक मोटी रूप रेखा बहुत-कुछ बन चुकी है। परंतु अब भी उसमें अनेकानेक बडे बडे अतराल हैं जिनके कारण उक्त रूप रेखा को किसी भी प्रकार परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इन्हीं कमियों के कारण अनेकों प्रदेशों के इतिहास आदि के विवरण या तो अधूरे अथवा सर्वथा एकांगी ही हैं। इस प्रकार की कमियों तथा एक पक्षीयता को दूर करने के लिए प्रादेशिक और क्षेत्रीय इतिहास तथा साहित्य के अध्ययन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना सर्वथा अनिवार्य हो गया है। पुन यह बात भी सर्वमान्य हो गई है कि इतिहास संस्कृति और समाज आदि के व्यापक ज्ञान तथा तद्विषयक अध्ययन को परिपूर्ण करने के लिये उस क्षेत्र अथवा प्रदेश के समकालीन अथवा उस काल विशेष से सम्बद्ध साहित्य का भी गहराई तक विस्तृत अध्ययन और उससे प्राप्त जानकारी की पूरी पूरी जाँच पडताल होनी चाहिये।

यही नहीं प्रादेशिक भाषाओं अथवा विभिन्न क्षत्रीय बोलियों के उद्गम विकास और समय समय पर उन पर पडने वाले अनेकानेक अलग अलग प्रभावों को ठीक तरह से जानने और उनकी प्रगति को समझने के लिये भी विभिन्न कालीन साहित्य के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के लिये यथासभव विशेष प्रयत्न हो रहे हैं। अत ऐसे प्रादेशिक अथवा क्षत्रीय साहित्य की एक या अनेक कृतियों के सर्वाङ्गीण गहन अध्ययन से परिपूर्ण ग्रथा की सदव समुत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा बनी रहती है क्योंकि उनके प्रकाशन से तब तक सुलभ ज्ञान की सीमाओं म थोडी बहुत वद्धि की आशा की जाती है। अधिकाधिक अध्ययन और निरतर चल रहे वाद विवादों अथवा विवेचनों के फल स्वरूप प्राप्त ऐसे विशेष तथ्यों को भी सयत्न परखा जाना चाहिए कि उनम से जो मान्य हो जावें उनसे ज्ञान सरिता को अधिक समृद्ध तथा गति शील बनाया जा सके। यही कारण है कि श्रीधर व्यास कृत 'रा रणमल्ल छद' के इस नए सस्करण का प्रकाशन क्षत्रीय इतिहास साहित्य और भाषा के अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

दल गुजरात का सूबेदार था। अत यह अनुमान तर्क-सगत ही है कि सन् १४०७ ई० ‌में जफर खा के मुजफ्फर शाह नाम से स्वय को गुजरात का स्वाधीन सुलतान घोषित करने के बाद ही श्रीधर व्यास ने इस काव्य की रचना की होगी जिससे अपने काव्य म उसने जफर खा के लिये अनायास ही बारबार सुरताण' "०" का प्रयोग किया। इस प्रकार से इस काव्य के रचना काल को सन् १४०८ से १४११ ई० तक में सीमित कर सकते हैं।

इस 'रा रणमल्ल छद' काव्य में वर्णित मुख्य युद्ध के विषय के बारे में अब कोई शका समाधान का कारण नहीं रह जाना चाहिये। सन् १३९१ ई० म दिल्ली के तुगलक सुलतान नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह द्वारा नियुक्त गुजरात के सूबेदार जफर खा ने सन् १३९८ ९९ ई० में जब ईडर पर दूसरी बार आक्रमण किया तब ईडर के राव रणमल्ल के साथ उनका जो सघर्ष हुआ उसी का विवरण इस काव्य मे किया गया है। कारण कुछ भी हुआ हो मुसलमान इतिहासकार भी यह स्वीकार करते हैं कि इस बार के आक्रमण में जफर खा को रणमल्ल के विरुद्ध कोई सफलता नहीं मिली थी।[१] इसी तथ्य को श्रीधर व्यास ने अपने इस काव्य म रणमल्ल की अनोखी अभूतपूर्व सफलता के रूप मे अतिरंजित कल्पनापूर्ण शब्दावली के द्वारा प्रस्तुत किया तथा अंतिम छद मे इवरछत्त रवि तळिकरू' के रणमल्ल के स्वप्न का भी उल्लेख कर दिया है। जफर खा की इस विफलता का महत्त्व तब इस कारण भी बढ गया था कि इसके कुछ ही समय बाद तमूर लग द्वारा पराजित खुदाळम 'असपति' सुलतान महमूद तुगलक दिल्ली स भाग कर उससे सैनिक सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से जफर खा के पास गुजरात पहुँचा था।

इस काव्य के पूर्व भाग म खभात धूलका (धोलका) आदि नगरो म किये गये रणमल्ल के अनेकों उत्पातों तथा गुजरात की तत्कालीन प्रमुख नगरी पट्टण (पाटण) तक म व्याप्त उसके आतक का वर्णन करते हुए कवि ने अनेकानेक मुसलमान वीरों, मलिकों (स्थानीय शासकों) आदि कई एक सेनानायकों के उसके हाथों पराजित होने का उल्लेख किया है। परन्तु रणमल्ल के ही मुख स उसकी जिन दो विशिष्ट विजयों की बात इस काव्य (छ० स० ३२ ३३) म कहलाई गई है, उनकी ऐतिहासिकता और उनस सबद्ध व्यक्तियों की सही पहिचान विषयक विवेचन आवश्यक हो जाता है। प्रथम तो रणमल्ल ने जमीदफर खान (क) दारुण दळ' को पराजित कर भगा देने का दावा किया है। उसके इस दावे का पूर्ण समर्थन मेवाड के सुविख्यात

१ सतीशचन्द्र मिश्र दी राइज आफ मुस्लिम पावर इन गुजरात, पृ० १४५ १४६।

सामग्री में कोई स्पष्ट उल्लेख नही होने के कारण ही रणमल्ल के शान की किसी घटना के उक्त काव्य म उल्लेख को सवथा अविश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है।

वि० स० १२ ६३ म उल्लिखित सोनगिरि (जालोर) के कान्हडदेव के 'गज्जणवइ असुरइ' के साथ युद्ध कर सोमनाथ की मूर्ति छीन लेने और उसको पुन प्रतिष्ठित करने की बात म उल्लेखनीय अनैतिहासिकता यही है कि कवि ने भ्रमवश दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी को 'गज्जणवइ (गजनीपति) कहा है। महमूद गजनी द्वारा सन् १०२५ ई० म ध्वस्त सोमनाथ के सुप्रसिद्ध मदिर का गुजरात क चौलुक्य शासकों ने पुनर्निर्माण करवाया था। गुजरात विजय के लिये अलाउद्दीन खिलजी द्वारा भेजी गई मुसलमानी सेना ने सोमनाथ के इस पुनर्निर्मित मदिर को जून ६ १२९९ ई० को ध्वस्त कर उसमें स्थापित शिवलिंग को खड खड कर दिया। उस भग्न शिवलिंग के इन खण्डों को अपने साथ लेकर जब यह विजयी मुसलमानी सेना दिल्ली को लौट रही थी, तब जालौर के पास उसम उत्कट विद्रोह उठ खडा हुआ। उससे पूरा लाभ उठा कर जालौर के शासक कान्हडदेव न उस भग्न शिवलिंग के उन खण्डों को अपने अधिकार म ले लिया और बाद में उन्हें यत्र-तत्र प्रतिष्ठित किया। यों "रावल कान्हडदेव न हिन्दुस्तान की बडी मर्यादा बनाये रखी"।[४] अत कवि ने यहां कान्हडदेव का सादर उल्लेख किया है, परन्तु अपने इस कथन म उपयुक्त सस्पष्ट अनैतिहासिकता की ओर कवि का ध्यान कैसे नहीं गया, यह बात समझ में नहीं आती है।

ईसा की १४वीं शती के मध्य में जब रणमल्ल ईडर की राजगद्दी पर बैठा, तब तक गुजरात प्रदेश में दिल्ली क सुलतानों का आधिपत्य सुदृढ रूप से स्थापित हो चुका था, परन्तु वह मुख्यतया समतल मदानी क्षेत्रों और प्रमुख नगरों अथवा कसबों तक ही अधिकतर सीमित रहा था। गुजरात विजय के बाद भी उसके अधीनस्थ प्रभाव पूर्ण प्रमुख शक्तिशाली राजपूतों के सुदृढ गढ मुसलमानी सत्ता की विरोधी पूर्णतया स्वतन्त्र इकाइयो के रूप में यथावत् बने रहे। गुजरात के पूर्वी सीमात क्षेत्र मे स्थित ईडर और चापानेर—पावागढ में तब मुसलमानी सत्ता क विरोधी प्रयत्न चाले लगे तथापि विकट अगम पहाडों में स्थित सुदृढ दुर्गों से शासन कर रहे इन विरोधी स्वाधीन राजपूत शासकों का दमन करने का तब कोई सुव्यवस्थित विशेष सशक्त आयोजन न सभव था और न किया जा सका। फिरोज तुगलक के शातिपूर्ण समृद्धि-कारक शासनकाल म कई वर्षो तक गुज

---

४ अशोक मजुमदार चौलुक्याज आफ गुजरात पृ० ४१ ४८, ३७० ३७५, सतीशचन्द्र मिश्र, दी राइज आफ मुस्लिम पावर इन गुजरात पृ० ६३ ६४, दशरथ शर्मा, राजस्थान थ्रू दी एजेस १, पृ० ६३९ ६४१, मुहणोत नणसी की ख्यात, (नागरी प्रचारिणी सभा), १, पृ० १५५ १६०।

रात की सूबेदारी करने के बाद अपनी स्थानीय स्थिति को सुदृढ़ समझ कर तब जफ़र खां प्रथम अथवा उसके सहायक शमसुद्दीन अनू राजा ने तदर्थ जो प्रयत्न किए थे, उनकी विफलता का उल्लेख पहिले किया ही जा चुका है। गुजरात में स्वाधीन प्रांतीय सल्तनत की सुनिश्चित संभावना के सुस्पष्ट होने के बाद ही ईसा की १५वीं सदी में तदर्थ सीमित सफल आयोजन संभव हो सके थे। अतः ईसा की १५वीं सदी के उत्तरार्द्ध में इन सीमांत पहाड़ी प्रदेशों में व्याप्त परिस्थितियों तथा वहां के राजपूत राजाओं के दृष्टिकोण और उनकी गतिविधियों का अतिरंजित होते हुए भी बहुत कुछ स्पष्ट चित्रण 'रणमल्ल छंद' में मिलता है जिससे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार सामग्री के रूप में इस काव्य का अध्ययन और विवेचन किया जाना चाहिए।

इस संस्करण के संपादक द्वारा यत्र तत्र अनजाने दुहराई गई एक ऐतिहासिक भूल का निराकरण करना अत्यावश्यक जान पड़ता है। समूचे राजस्थान पर अपना आधिपत्य स्थापित करने वाली एकमात्र मुसलमानी सत्ता मुगल साम्राज्य ही थी अतएव राजस्थान में यवन सत्ता और मुगल आधिपत्य पर्यायवाची शब्द बन गए। यही कारण है कि इस काव्य के अंतिम छंद (सं० ७०) का अर्थ लिखते समय अनायास ही 'मिळ्छायण' का अर्थ मुगल लिख दिया गया। इसी प्रकार भूमिका में भी पृ० २६-२७ पर 'यवन' के स्थान में भ्रमवश यदा कदा 'मुगल' लिखा गया है। यह तो सुज्ञात है कि तब दिल्ली के सुलतानों अथवा गुजरात के सूबेदारों में कोई भी मुगल नहीं था।

इसी संदर्भ में इस काव्य के एक और उल्लेख का स्पष्टीकरण अनिवार्य हो जाता है। छं० सं० १८ और ५० में गुजरात की मुसलमानी सेना में विभिन्न जाति के सैनिकों आदि का विवरण लिखते समय कवि ने 'मूगल मेवड़ा' तथा 'मूगळ महामलिक' का भी उल्लेख किया है। अनुवाद में 'मूगळ' का अर्थ 'मुगल' दिया है जो ठीक नहीं है उसका सही अर्थ 'मंगोल' है। सिंधु नदी के पार अफगानिस्तान आदि उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रदेशों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर ईसा की १३वीं सदी के मध्य से ही ये बौद्ध धर्मावलम्बी मंगोल दिल्ली की सल्तनत पर निरंतर आक्रमण करते रहते थे। इन आक्रमणों में बंदी हो गए मंगोलों ने जलालुद्दीन खिलजी और अलाउद्दीन खिलजी के शासनकालों में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। तुगलक सुलतानों के शासनकाल में उन मुसलमान मंगोलों के वंशज दिल्ली सल्तनत की सेना में पुनः भरती किये जाने लगे थे और उनमें से कुछ यदा कदा उच्च पदों पर भी नियुक्त हुए थे।[१] सो उक्त छंदों में ऐसे ही मुसलमान मंगोलों के 'मूगळ' नाम का उल्लेख है।

---

१ मेहदी हुसैन, दी राइज एण्ड फॉल ऑफ मुहम्मद बिन तुगलक (१९३८ ई०) पृ० २२७-२०८।

साहित्यिक और भाषा वैज्ञानिक दृष्टियों से भी 'रा रणमल्ल छंद' का सविस्तार गंभीर गहन अध्ययन अत्यावश्यक है। ईसा की १४वीं शती गुजरात और राजस्थान के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण निर्णायक परिवर्तन बिंदु प्रस्तुत करती है। गुजरात विजय के बाद वहां मुसलमानी सत्ता स्थापित हो गई और धीरे धीरे उसके आधिपत्य के साथ उसकी संस्कृति भाषा आदि का प्रभाव समूचे प्रान्त में बढ़ने लगा। उधर राजस्थान में चित्तौड़ के प्रथम साके तथा मेवाड़ के रावल घराने की समाप्ति के साथ ही तब तक चले आ रहे पूर्व मध्यकालीन राजस्थान तथा उसकी युगयुगीन ऐतिहासिक परम्पराओं आदि का भी अन्त हो गया। परन्तु राजस्थान के उस पुरातन राजनैतिक मानचित्र को पूर्णतया मिटा कर सारी स्लेट को साफ कर देने वाले दिल्ली सल्तनत के प्रबल प्रतापी मुसलमान शासक भी वहां अपना मनचाहा नया राजनैतिक मानचित्र अंकित नहीं कर सके, प्रत्युत ईसा की इस १४वीं शती के मध्य तक दिल्ली की मुसलमानी सल्तनत का रहा-सहा प्रभाव भी धीरे धीरे वहां से लुप्त होने लगा था। इस प्रकार जकतापूर्ण युगांतर काल में पूर्व तथा पश्चिम क्षेत्रों से आए हुए कई नये राजपूत घराने राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जड़ें जमाने में लगे हुए थे। इस प्रकार तब राजस्थान के राजकीय ही नहीं, पूर्णतया नये राजपूत राजवंशीय मानचित्र का भी सीमांकन होने लगा था। यों राजस्थान के इतिहास में जिस सर्वथा नये युग का प्रादुर्भाव हुआ उसके साथ ही राजस्थान के साथ गुजरात के तब तक चले आ रहे सांस्कृतिक साहित्यिक तथा भाषिक आदि सारे सम्बन्ध धीरे धीरे क्षीण होने लगे, और अब पाई जाने वाली सब विभिन्नताएं तदन्तर निरंतर बढ़ती ही गई। अतएव ईसा की १५वीं शती के प्रारंभ में रचित ऐसे काव्यों का अध्ययन साहित्यिक और भाषाई एकता की महत्त्वपूर्ण कड़ियों के रूप में किया जाना चाहिए। पुनः ऐसे काव्यों में पुरानी गुजराती अथवा जूनी राजस्थानी को प्राकृत या अपभ्रंश से जोड़ने वाली अनेकानेक प्राप्य कड़ियां भी खोजी जानी चाहिए, जिससे बाद में प्रयुक्त होने वाले तथा आज भी प्रचलित अनेकों शब्दों की ठीक व्युत्पत्ति प्राप्ति शास्त्र की जाकर उसे सही रूप में निर्धारित की जा सके। गुजराती तथा राजस्थानी के साथ ही हिंदी के शब्द कोष को भी वह विशेष उल्लेखनीय उपलब्धि होगी।

अपनी विस्तृत भूमिका में इस संस्करण के संपादक ने रा रणमल्ल छंद की समस्या और स्वरूप का सयत्न विस्तृत विवेचन किया है। इस काव्य ग्रंथ के अकस्मात् पाये जाने तथा उसके प्रथम संस्करण के संपादन और प्रकाशन सम्बन्धी जानकारी के साथ ही इस काव्य के रचयिता तथा उसकी अन्य रचनाओं विषयक ज्ञात विवरण भी दे दिया है। इस काव्य में वर्णित मुख्य तथा अन्य युद्धों के बारे में अब तक चल रहे वाद विवादों को सुलझाने अथवा भ्रांतियों को दूर करने का संपादक ने जो उल्लेखनीय सफल प्रयत्न किया है उसकी परिपुष्टि इस प्रस्तावना में पहिले किये गये विवेचन से की जा चुकी है। इस काव्य की भाषा की समीक्षा करते समय उसमें परिनिष्ठित प्राकृत अथवा

अपभ्रंश की शब्दावली के उदाहरण देने के बाद यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि अपनी किन विशेषताओं के कारण वह प्राकृत या अपभ्रंश से पृथक और पश्चात् कालीन राजस्थानी भाषा के अति निकट देख पड़ती है। इस काव्य के साहित्यिक महत्त्व को सुस्पष्ट करने के लिये उसके काव्यत्व उसमें देख पड़ने वाले युग चित्रण तथा उसमें पाये जाने वाले रस अलंकार, छंद आदि के साथ ही उसकी वर्णन शैली और शब्द प्रयोगों की भी सोदाहरण समीक्षा की गई है। इन सब ही विषयों पर कुछ भी लिखना मेरे लिये सर्वथा अनधिकार चेष्टा ही होगी। मूल पाठ के साथ पाठ भेद और मूल काव्य का हिन्दी में भावार्थ तथा अन्त में शब्द कोष दे दिया गया है जिससे इस काव्य के मूल पाठ को समझने तथा उसके अध्ययन में बड़ी सुविधा हो गई है। इस प्रकार सब ही विभिन्न वर्ग, स्तर अथवा रुचि के पाठकों के लिये इस संस्करण को सहायक और उपयोगी बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

अतएव यह बात तो सर्वथा सुनिश्चित जान पड़ती है कि इस महत्त्वपूर्ण काव्य के इस नये सुसंपादित संस्करण के प्रकाशन तथा उसकी इस विस्तृत भूमिका में प्रस्तुत विवेचन से इस काव्य का ही नहीं तत्कालीन साहित्य के भी गहन अध्ययन का एक नया अध्याय अनायास ही प्रारम्भ हो जायेगा। अतएव रणमल्ल छंद के इस नये संस्करण का स्वागत करता हूं और आशा करता हूं कि इसके पठन पाठन से भाषा शास्त्रियों तथा साहित्यकारों को भी नई दिशा और विशेष प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी।

'रघुबीर निवास'
सीतामऊ (मालवा)
सितम्बर २०, १९७२ ई०

—रघुबीरसिंह

रणमल्ल छंद

भूमिका

रणमल्ल छंद   संज्ञा और स्वरूप

'रणमल्ल छद' एक 'छद सज्ञक काव्य है। स्वय रचयिता ने भी इसे 'वर-वीर छद' कहा है।[1] सामान्यत छद' शब्द का अर्थ नियमित अक्षरों अथवा मात्राओं में रचित एक पद्य प्रकार' लिया जाता है। छद' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद म मिलता है। इसकी व्युत्पत्ति छद धातु से मानी गयी है, जिसका अर्थ आवृत करने या रक्षित करने के साथ साथ प्रसन्न करना भी होता है। प्रसन्न करने के ही अर्थ मे निघण्टु म छद धातु भी मिलती है। कुछ विद्वानों का मत है कि— इसी से छद शब्द का सम्बन्ध मानना अधिक युक्तिसगत है।[2] संस्कृत साहित्य म देवी-देवताओ की स्तुतियों (स्तोत्रों) मे प्राय एक ही छद का व्यवहार पाया जाता है जिसका अभिप्राय सम्बन्धित देवी देवताओं को सुप्रस न करना है। राजस्थानी साहित्य में भी इस प्रकार की अनेक रचनाए उपलब्ध हैं, जिनको कहीं तो छद की जाति—रसावळो त्राटको पाद्धडी, छप्पय रोमकन्, मोतीदाम आदि—से अभिहित किया गया है और कहीं केवल छद कह कर। शन शन राजस्थानी कवियों द्वारा देव स्तुति परक साधनों का उपयोग अपने आश्रयदाताओं की स्तुति के लिए होने लगा। राजसभाओं में भाट और चारणों द्वारा जो विरुदावली बोली जाती थी, उसे छद' कहा जाता था—

"तिणि प्रस्तावि पापश्रुत भट्टि मदनकुमर तणा छद बोल्या।"
तथा—"इहि अवसरि सुश्रुत भट्टि राय विवेक तणा छद भण्या।"
—प्रबोध चिंतामणि।

इसी प्रकार इस काल के कवियों ने अपने आश्रयदाताओं के चरित्र से सम्बन्धित अथवा अन्य चरितात्मक काव्यों को छद सज्ञा से अभिहित करना पसद किया। इन छद सज्ञक रचनाओं में भी पूर्वोल्लिखित दो प्रकार उपल ध होते हैं—प्रथम तो एक ही छद (मगलाचरण और कलस को छोड कर) मे रचित और द्वितीय विभिन्न प्रकार के

---

१ रणमल्ल छन्द छ० १
२ हि दी साहित्य कोश पृ० २९० ९१

हैं। इस प्रकार, रणमल्ल छन्द द्वितीय प्रकार की रचना है। इसमें विभिन्न प्रकार के छन्दों का उपयोग किया गया है।

'छन्द' शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ के साथ-साथ पर्याय में प्रशंसा-परक अर्थ भी होता है। बहुत सम्भव है छन्द नामक काव्यों के रचयिताओं के समक्ष अपनी कृति के नामकरण के समय यही अर्थ रहा हो। इस दिशा के उपलब्ध काव्यों—राउ जइती रउ छन्द, वीठू सूजो नगा मैहो, रामदेवजी रा छन्द, जाडू, राजा करणसिंहजी रो छन्द, राठौड़ राजड़ रतनसी रो छन्द, माहेश मयाराम, माताजी रो छन्द, वीठू मोमो, जगदू साहारो छन्द, सीहो, पद्मावती छन्द, गुणसागर गोरखनाथजी रो छन्द, गाडण केसो इत्यादि—के देखने पर उक्त सम्भावना और भी अधिक परिपुष्ट होती है क्योंकि उक्त काव्यों में कवियों ने अपने कथानायक के चरित्र का विस्तार के साथ वर्णन किया है।

स्वरूप

स्वरूप की दृष्टि से रणमल्ल छन्द वीररसात्मक ऐतिहासिक खण्डकाव्य की कोटि में आता है। ऐसा प्रायः विद्वानों—रा० ब० केशवलाल हर्षदराय ध्रुव[1] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल[2] श्री केशवराम काशीराम शास्त्री[3] श्री जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे[4] डा० हरीश[5]—ने स्वीकारा है, परन्तु डा० दशरथ शर्मा का मत इससे भिन्न है। उन्होंने रणमल्ल छन्द को प्राचीन ऐतिहासिक रास अथवा रासान्वयी-काव्य मानते हुए इसके सर्जन के सम्बन्ध में परिकल्पना की है कि— सम्भवतः सन् १३९८ में मुजफ्फरशाह गुजराती ने ईडर पर आक्रमण किया। रणमल्ल ने वीरतापूर्वक उसका सामना किया। कई दिनों तक ईडर का दुर्ग शत्रुओं से घिरा रहा। ऐसे अवसरों पर अपने मनोविनोद और शत्रुओं को चिढ़ाने के लिए, घिरे क्षत्रिय अनेक प्रेक्षणक और रास (हम्मीर महाकाव्य और कान्हडदे प्रबन्ध में इसका उल्लेख मिलता है) किया करते थे। विशेषकर सिपाहियों को जोश दिलाने वाली कृतियाँ ऐसे समय में अभिनीत होती होंगी। श्रीधर की कृति शायद इसी १३९८ ई० के घेरे के समय निर्मित हुई हो।"[6] डा० दशरथ शर्मा ने जिन काव्यों (हम्मीर महाकाव्य और कान्हडदे प्रबन्ध) के वर्णन के आधार पर उपर्युक्त परिकल्पना की है वह वास्तविक न होकर एक रूढ़ि समाश्रित है। जिसे

---

१ प्राचीन गुर्जर काव्य पृ० ९

२ हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ५२

३ कविचरित भाग १-२, पृ० १७

४ गुजराती साहित्य का इतिहास, पृ० ३०

५ शोध पत्रिका वर्ष १२, अंक ३

६ रास और रासान्वयी काव्य पृ० २४३

महा रस भग अथवा छत्र भग सना से अभिहित किया जा सकता है। इस प्रहृढि का उत्स बाल्मीकि रामायण में उपलब्ध है—'सुवेल पवत पर बठे हुए राम-लक्ष्मण लका के वभव को देख रहे हैं। रावण का राज्य वभव अद्वितीय है। राम के मित्र सुग्रीव से रावण का यह वैभव नहीं देखा गया और वह छलाग लगाकर लका जा पहुँचा। वहा पहुच कर उसने रावण के विचित्र मकुटों को उतार कर पटक दिया। तत्पश्चात् दोनों योद्धा मल्लयुद्ध म प्रवत्त हुए। सुग्रीव ने मल्लयुद्ध म भी रावण को खूब छकाया तथा विजयी बन कर राम के पास लौट आया।'[1] अध्यात्म रामायण (सग ५) आनन्द-रामायण नसिंह पुराण रामचद्रिका (१५/४८) और तुलसी कृत रामचरित मानस (लका काड १३) म उक्त छत्रभग का काय स्वय रामचन्द्रजी अपने हाथों से सम्पादित करते हैं।

राजस्थानी काव्यों—पद्मनाभ—कान्हडदे प्रबन्ध महेश—हम्मीर रासो, जोधराज—हम्मीररासो चन्द्रशेखर—हम्मीरहठ इत्यादि—म उपयुक्त प्रहृढि कुछ परिष्कृत रूप से प्रयुक्त हुई है जिसम घिरे हुए कथानायक के यहा राजप्रासाद म नत्य और राग रग का आयोजन होता है। उसे देख कर घेरा डालने वाला प्रतिद्वद्वी उद्विग्न हो जाता है। वह अपने किसी धनुधर को आज्ञा देता है कि—उक्त रग मे भग करो। धनुधर अपना कौशल दिखाता है जिससे नत्य अनुरक्त नटी धराशायी हो जाती है अथवा उसका वार खाली चला जाता है और वह बाण सभासदों के सम्मुख आ गिरता है। कथानायक अपने प्रतिद्वद्वी की चाल को तत्काल समझ लेता है। इतने म कोई वीर (विशेषकर शरणागत) कथानायक के सम्मुख उपस्थित होकर प्रतिपक्षी पर वार करने की अनुमति मागता है। राजा केवल छत्रभग की अनुमति दे देता है। स्वामीभक्त वीर अपने लक्ष्य पर बाण चलाता है जिससे प्रतिद्वद्वी (बादशाह या सेनापति) का छत्रभग हो जाता है। समस्त विपक्षी दल इस घटना से सशकित हो जाता है।

पूव कथित रामचरित म प्रयुक्त तथा राजस्थानी काव्यों मे प्रयुक्त उक्त कथानक रूढि में जो स्वरूपगत अतर दृष्टिगोचर होता है वह केवल परिस्थिति जन्य है। राम के द्वारा घेरा गया रावण अन्त म पराजित होता है परन्तु राजस्थानी काव्यों के नायक सबल (बादशाह आदि) प्रतिद्वद्वियों के द्वारा घिरे रहने के उपरांत भी अन्त म विजयी होते हैं। अत राजस्थानी कवियों ने अपने नायकों के चरित्र को उच्च चित्रित करने के लिए उक्त प्रहृढि का परिष्कार कर लिया है। अतएव इस कथानक रूढि को देखते हुए डा० दशरथ शर्मा की छन्द की सजन-सम्बन्धी परिकल्पना को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

---

१ बाल्मीकि रामायण, युद्ध काड पूर्वार्द्ध सग ४०

यदि डा० शर्मा द्वारा परिगणित उक्त परिभाषा को थोड़ी देर के लिए वास्तविक अर्थ में लें तो भी प्रस्तुत रणमल्ल छंद को प्रबन्ध अथवा रास की कोटि में नहीं रखा जा सकता क्योंकि—वैभव तथा सूत्रधार विहीन नाट्यरूपक होता है और इसका नायक कोई निम्नजातीय व्यक्ति होता है।[1] जबकि रणमल्ल छंद का नायक एक कुलीन क्षत्रिय है और स्थान स्थान पर कवि ने वर्णन किए हैं। ऐसी स्थिति में रणमल्ल छंद का वैभव एवं नाटकत्व कोई नाट्यरूपक नहीं कहा जा सकता। रासो साहित्य पर विचार करते हुए श्री नरोत्तमदास स्वामी ने स्वरूप की दृष्टि से रणमल्ल छंद को रासो शैली की रचना माना है।[2] विस्तार के अतिरिक्त काव्यगत अन्य विशेषताएं—ऐतिहासिकता, वर्णनात्मकता, वीर रस परिपाक अलौकिक तत्वों का समावेश इत्यादि—प्रस्तुत छंद में उपलब्ध हैं। अतएव रणमल्ल छंद को शिल्प की दृष्टि से ऐतिहासिक रासोकाव्य स्वीकार कर लेने में कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

रणमल्ल छंद रचना, रचयिता और रचनाकाल

रचना

रणमल्ल छंद की एकमात्र हस्तलिखित प्रति पूना के डेक्कन कालेज के सरकारी संग्रह (No 1541 of 1891 95 Dec Col, Extent foll 54+4) में उपलब्ध है जिसे प्रकाश में लाने का श्रेय—प्राचीन गुजराती साहित्य के उद्धारकर्ता स्व० रा० ब० केशवलाल हर्षदराय ध्रुव को है। जब उन्होंने कान्हडदे प्रबंध के पाठ शुद्धयर्थ पूना से उसकी हस्तलिखित प्रति मंगवाई तो उन्हें अकस्मात् 'रणमल्ल छंद' के दर्शन हुए। अनुसंधित्सु श्री ने तत्काल इसके महत्व को आंक लिया और सन् १९२७ ई० में गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटी द्वारा संचालित—कवीश्वर दलपतराम स्मारक ग्रंथमाला, नं० ४ के 'पंदरमा शतकना प्राचीन गुजराती काव्य' नामक संकलन में इसे सुसम्पादित करके साहित्य जगत के समक्ष रखा।

रचयिता

रणमल्ल छंद के रचयिता ने अपनी काव्यकृति के प्रारम्भ में राव रणमल्ल का सुविस्तृत परिचय दिया है परन्तु अपने जीवन के विषय में कुछ नहीं लिखा। यदि पूना

---

१ गर्भविमर्श रहितं प्रहरण हीन नायकम्।
असूत्रधारमेकाङ्क मविष्कम्भ प्रवेशकम्॥
नियुद्धसम्फेट युतं सर्व वृत्तिसमाश्रितम्।
नेपथ्ये गीयते नान्दी तथा तत्र प्ररोचना॥

—साहित्य दर्पण ६ प०, २८६ ८७

२ रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो, पृ० २२

डेक्न कालेज के सरकारी संग्रह में उपलब्ध हस्तलिखित प्रति पर प्रतिलिपिकार ने पुष्पिका श्रीधर व्यास कृत रा रणमल्ल छंद। सं० १६६२ माग।[1] न दी होती तो यह महत्वपूर्ण काव्य एक अज्ञात कवि की कृति के रूप में साहित्य जगत के समक्ष आता। इस संक्षिप्त पर अत्यन्त महत्वपूर्ण पुष्पिका द्वारा 'रणमल्ल छंद' के रचयिता के नाम के साथ साथ उसके व्यास होने का भी उद्बोध होता है। व्यास—ब्राह्मणों का एक उपवर्ग, एक उपाधि और एक राजकीय पद होता है। रणमल्ल छंद के अन्तर्गत पर्याप्त लम्बे संघर्ष का स्मरण[2] हिन्दू संस्कृति की रक्षार्थ रणमल्ल को प्रकारान्तर से दिया गया उद्बोधन[3] एवं 'रणमल्लो जयति भूमर्ता',[4] 'रणमल्ल मद मदनो जयति'[5] आशीर्वचन इत्यादि उल्लेख व्यास श्रीधर को व्यास की सामान्य जाति एवं सामान्य कथावाचक की उपाधि से पृथक् उद्घोषित करता है।

श्री के० एम० मुन्शी[6] श्रीधर को रणमल्ल का राज्याश्रित कवि मानते हैं परन्तु यह अधिक सम्भव है कि—श्रीधर रणमल्ल का राज्याश्रित कवि न होकर उसके धर्माधिकारी के रूप में व्यास पद पर रहा हो। व्यास या पुरोहित सामान्यतया धार्मिक मामलों में शासक का परामर्शदाता होता था। हम्मीर का पुरोहित विश्वरूप था और जालोर में सोमचन्द्र व्यास एक मन्त्री की स्थिति को धारण किए हुए था।[7] रणमल्ल छंद में वर्णित रणमल्ल के क्रिया कलापों को देख कर भी यही मत परिपुष्ट होता है कि रणमल्ल केवल राज्य लोभ के कारण नहीं लड़ा था बल्कि हिन्दू संस्कृति की रक्षार्थ ही उसने यवनों से लोहा लिया था। कोई आश्चर्य नहीं कि उसके मूल में भी व्यास श्रीधर का प्रोत्साहन रहा हो।

कवि की अन्य रचनाएं

व्यास श्रीधर की रणमल्ल छंद के अतिरिक्त दो अन्य रचनाएं वर्तमान तक ज्ञात हैं,[8] जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

भागवत दशम स्कंध इसकी एक खंडित प्रति प्राचीन गुजराती के अन्वेषक स्व० मणिलाल बकोर भाई व्यास को मिली थी। यह केवल १२७ छंदों की अधूरी प्रति है।

---

१ प्राचीन गुर्जर काव्य पृ० २

२ छंद, ३२ ३३

३ छंद ३६ ४०

४ छंद २

५ छंद ६

६ गुजराती एण्ड इटस लिटरेचर, पृ० १०१

७ डा० दशरथ शर्मा—अर्ली चौहान डाईनेस्टीज पृ० २००

८ रा ब केशवलाल ह० ध्रुव—प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ० ६ ७

सप्तशती (चौपाई छंद) इसमें मार्कण्डेय पुराण के आधार पर संक्षिप्त देवी चरित्र का वर्णन है। यह १२० छंदों का सुन्दर काव्य है। जिसमें प्रथम एक शार्दूल विक्रीडित छंद संस्कृत में है। शेष काव्य में—चौपाई (मान) आर्या (उद्गीति), छप्पय, पुरअट्ट (दोहरा), सिंहविलोकित सारसी (हरिगीत), हाकली (मरहट्टा), दुमिला, भुजंगप्रयात नाराच और दलपत सामर छंदों का प्रयोग हुआ है।

रचनाकाल

रणमल्ल छंद में कवि के जीवनवृत्त की तरह रचनाकाल का भी उल्लेख नहीं है। ग्रंथ साक्ष्य से ऐसा प्रतीत होता है कि इस काव्य की रचना सन् १३९८ ई० के उपरांत ही हुई होगी। क्योंकि इस काव्य में दिल्लीपति के पराभव के लिए दो व्यक्तियों को समर्थ माना गया है—एक तो 'नव शल्य रणमल्ल' और द्वितीय 'प्रम सुल्य तिमिरलिंग अर्थात् तैमूर' को। तैमूर ने सन् १३९८ ई० में दिल्ली पर अधिकार करके सहस्रों निरपराध व्यक्तियों को मरवा डाला था। श्री के० एम० मुंशी रणमल्ल छंद का सं० १४५७ वि० में रचा जाना मानते हैं।[1]

रणमल्ल छंद में वर्णित युद्ध

रणमल्ल छंद भाषा, भाव एवं इतिहास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण काव्य कृति है ऐसा सभी समालोचक समवेत स्वर से स्वीकार करते हैं परंतु छंद में वर्णित युद्ध के विषय को लेकर विद्वानों के पृथक पृथक दो वर्ग बने हुए हैं। प्रथम वर्ग के विद्वान्—जिनमें स्व० रा० ब० केशवलाल हर्षदराय ध्रुव[2] श्री रामचन्द्र शुक्ल[3] डा० हरीश[4] और डा० शिवप्रसाद सिंह[5] प्रमुख हैं—इस छंद में वर्णित युद्ध को 'जफरखान' से सम्बन्धित युद्ध मानते हैं। इसके विपरीत द्वितीय वर्ग के विद्वान्—जिनमें मौ० सय्यद अबुजफर नदवी,[6] डा० दशरथ शर्मा व श्री दशरथ ओझा,[7] केशवराम काशीराम शास्त्री[8] प्रो० श्री मंजुलाल मजमुदार[9] और श्री जयंतकृष्ण हरिकृष्ण दवे[10] प्रमुख हैं— इस छंद

१ दे० गुजराती एण्ड इट्स लिटरेचर पृ० १०१
२ प्राचीन गूर्जर काव्य पृ० ३४
३ हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ५२
४ शोध पत्रिका, वर्ष १२ अंक ३
५ सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य पृ० १२२
६ रणमल्ल छंद अने तेनो समय पृ० १०
७ रास और रासान्वयी काव्य, पृ० २४३-४५
८ कविचरित भाग १-२, पृ० १८-१९
९ गुजराती साहित्यना स्वरूपो पृ० १०७
१० गुजराती साहित्य का इतिहास पृ० ३०

में वर्णित युद्ध को 'मलिक मुफरह, निजामशाह सुल्तानी, फरहतुल मुल्क रास्तीखान" से सम्बन्धित युद्ध माना है।

उपर्युक्त युद्ध को मलिक मुफरह से सम्बन्धित मानने वाले विद्वानों ने अपने अभिमत का आधार रणमल्ल छन्द में प्रयुक्त मलिक एवं मुफरह शब्दों को बनाया है। उनकी मान्यता है कि—रणमल्ल छन्द के छंद १६ में प्रयुक्त 'मलिक मुफरह तथा छंद ४६ में प्रयुक्त 'मुफरदह नन्द' मलिक मुफरह के ही द्योतक हैं। रणमल्ल छन्द काव्य में जिस मलिक मुफरह सुल्तानी का वर्णन हुआ है वह यही (मलिक मुफरह, निजामशाह सुल्तानी, फरहतुल मुल्क रास्तीखान) है। इसी की ही लड़ाई के लिए यह काव्य लिखा गया है।[1]

यद्यपि रणमल्ल छन्द में वर्णित युद्ध जैसा कि प्रथम वर्ग के विद्वानों ने माना है पाटण के सूबेदार भफरखान के साथ हुआ युद्ध ही है पर द्वितीय वर्ग के विद्वानों द्वारा—मलिक, मुफरद सुलतान अमर्पति सुदाळम, खान इत्यादि शब्दों के वास्तविक अर्थों को न जानने पर पूर्वोक्त कल्पित विभ्रम उत्पन्न हुआ है। अन्यथा अन्य ऐसा कोई कारण नहीं है जिसके आधार पर इतिहास प्रसिद्ध रणमल्ल तथा भफरखान के युद्ध के बारे में संदेह किया जाय। काव्य के हिन्दी भावार्थ का अवलोकन करने पर यह बात और भी सुस्पष्ट हो जाएगी।

सन् १४६० में उत्कीर्ण कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में इस अभिलेख—'जैतकर्ण (रणमल्ल के पिता) को मेवाड़ के महाराणा हम्मीर ने अधीन किया था और हम्मीर के पुत्र क्षत्रपालसिंह ने भफरखान के दर्प को चूर करने वाले रणमल्ल को कैद किया था।'[2]—से यद्यपि रणमल्ल का मेवाड़ के महाराणा द्वारा अपमानित होना पाया जाता है परन्तु रणमल्ल के विशेषण द्वारा यह स्पष्ट रूप से ध्वनित होता है कि रणमल्ल ने भफरखान को बुरी तरह से छकाया था। रणमल्ल की यह अभूतपूर्व विजय यदि प्रस्तुत काव्य का प्रेरणा-स्रोत रही हो तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है।

प्रस्तुत छंद में स्थान स्थान पर रणमल्ल को 'वर वीर'[3] अथवा वर धमधज्ज'[4] जैसे श्रेष्ठ विशेषणों से विभूषित किया गया है तथा उसको श्रेष्ठ हिंदू धर्मरक्षक हम्मीर[5] तथा कान्हड़देव[6] की श्रेणी का शासक स्वीकारा है। यह एक तथ्य है

---

१ मौ० सं० अबुजफर नदवी—रणमल्ल छन्द अने तेनो समय, पृ० १०
२ बिब्लियोग्राफीका इंडिका
३ छन्द १
४ छन्द ५४
५ छन्द ४
६ छन्द, ६२

जिसका पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि रणमल्ल उस काल का असाधारण स्वातन्त्र्यप्रेमी वीर था और उसकी लड़ाई का निमित्त केवल मात्र अपने राज्य का लोभ न होकर धार्मिक भी था। छन्द में रणमल्ल को हिन्दू धर्म ब्राह्मण, गाय अबलाओं और बालकों का रक्षक बना कर इस तथ्य की पुष्टि की गई है।[1]

रणमल्ल का प्रतिद्वन्द्वी जफरखान भी गजनी के शासक से कम धर्मांध न था। उसने भी सोमनाथ की प्रतिष्ठा को भंग किया था व गौ ब्राह्मण बालक और स्त्रियों को प्रताड़ित करता रहता था।[2] रणमल्ल ने संगठित रूप से इसका प्रतिकार किया। उसने तत्कालीन राजपूतों का संगठन किया तथा उसका नेतृत्व स्वयं ने सम्हाला। इस संग्राम पर स्वयं रणमल्ल को गर्व था।[3] रणमल्ल की इच्छा समग्र भारत से यवनशासनोच्छेद की थी।[4] तदनुरूप उसने प्रयत्न भी प्रारम्भ किये। विभिन्न प्रकार से तत्कालीन शासक को कष्ट देना उसका प्रधान कार्य था।[5] भाग्य ने भी उसका साथ दिया। दिल्ली की सल्तनत ज्यों-ज्यों कमजोर होती जाती थी, रणमल्ल व उसके अनुयायियों के उपद्रव बढ़ते जाते थे। सल्तनत की ओर से अंतिम आश्रय युद्ध का लिया गया और रणमल्ल तथा उसके साथियों को कुचल देने का निश्चय किया,[6] परन्तु उसका नतीजा भी विपरीत ही निकला और जफरखान को मैदान छोड़ कर भागने के लिए विवश होना पड़ा।[7]

कुछ विद्वान (जिनमें मौ० मै० नदवी प्रमुख हैं) इस युद्ध का फारसी तवारीखों में उल्लेख न होने के कारण इसे संदेह की दृष्टि से देखते हैं परन्तु फारसी विद्वानों की यह परम्परा रही है कि जिस जिस युद्ध में स्वयं बादशाह अथवा सल्तनत की ओर से नियुक्त किसी अधिकारी को मैदान छोड़ कर भागना पड़ा है, उसका उल्लेख तक नहीं करते थे। यद्यावधि ज्ञात तथ्यों से भी उपर्युक्त अभिमत की पुष्टि होती है।

ऐतिहासिक ग्रंथों में गुजरात के सूबेदार जफरखान द्वारा सन् १३६३ १३९८ और १४०१ में ईडर पर तीन बार आक्रमण करने का उल्लेख मिलता है।[8] रणमल्ल छन्द की पाचवीं आर्या में रणमल्ल के साथ तैमूर का उल्लेख होने के कारण प्रस्तुत काव्य का

१ छन्द, ५४ ५५
२ छन्द १६ ४१
३ छन्द ३१
४ छन्द ७०
५ छन्द, ११ १२
६ छन्द, १६ १७
७ छन्द, ५६ ६१
८ श्री जोशी—ईडर राज्यनो इतिहास, पृ० १०० १०२

सजनकाल तमूर के आक्रमण सन् १३९७ के पश्चात् का ठहरता है। अन सन् १३९३ वाला आक्रमण इस काव्य का विषय नहीं माना जा सकता तथा सन् १४०१ के आक्रमण के समय रणमल्ल ईडर को त्याग कर विशनगर की ओर चला गया था। इसलिए इस काव्य का वण्य विषय सन् १३९८ वाला आक्रमण ही हो सकता है, जिसमे आक्राता भफरखान को मदान छोड कर भागना पडा था।

रणमल्ल के अन्य युद्ध

रणमल्ल छन्द मे रणमल्ल द्वारा भफरखान के विरुद्ध लडे गए मुख्य युद्ध के अतिरिक्त अ य युद्धो की जानकारी भी मिलती है[1], जिनमे रणमल्ल ने विजयश्री का वरण किया था—

रणमल्ल और झफरखान रूम

भफरखान फारसी बगाल का रहने वाला था। इसका श्वसुर इसी प्रात का नाजिम था। वह एकाएक शत्रुओं के हाथ से मारा गया। भफरखान वहा से दौड कर दिल्ली गया। बादशाह न उसे नायब वजीर का पद दिया। तत्पश्चात् उसे गुजरात का नाजिम बना दिया। भफरखान न लगभग आठ वष तक शासन किया और सन् १३६९ म चल बसा। भफरखान की मृत्यु क पश्चात् उसका बेटा दरियाखान गुजरात का हाकिम बना। उस भफरखान रूम का खिताब दिया गया। रणमल्ल छन्द मे रणमल्ल की स्व मुख उक्ति द्वारा इसी भफरखान क पराजित होने का उल्लख किया गया है।[2] यह घटना सन् १३७८ के आसपास की मानी जाती है।

रणमल्ल और शमसुद्दीन

शमसुद्दान का पूरा नाम—मिया उल मुल्क मलिक शमसुद्दीन अबुरिजा था। इसकी नियुक्ति भफरखान के नायब के रूप म सन् १३७८ म हुई थी। सम्भवत सन् १३७८ के आसपास [illegible] नये नायब ने भी ईडर पर आक्रमण किया होगा और रणमल्ल क साथ युद्ध में मु ह की खाई होगी। रणमल्ल छद के वणन से पता चलता है कि रणमल्ल एव शमसुद्दीन का द्वन्द्व युद्ध हुआ था और उसमें शमसुद्दीन परास्त होकर भाग गया था।[3]

---

१ मौ सै नदवी—रणमल्ल अने तेनो समय पृ १७ १९

२ दस दारुण दफरखान जयो, मिद मग्गउ मम्मद खग्गरइ। छद ३२

३ मिद सग्गरि समसुद्दीन नडो पच्छिमग्गउ अग्गो अगि मिडी। [illegible] ३३

रणमल्ल और मलिक मुफर्रह तथा भागर के यादव

रणमल्ल छन्द के रचयिता ने श्रीमुख उक्ति द्वारा रणमल्ल का अन्य सेनापतियों के साथ युद्ध और उसमें विजयी होने का संकेत किया है।[1] इससे ध्वनित होता है कि रणमल्ल उक्त सन् १३९८ वाले युद्ध से पहले भी काफी लडाइयां लड चुका था और उनमें विजयी हुआ था। इनमें 'मलिक मुफर्रह' और 'भागर देश (शायद बागड) के यादवों से लडी हुई लडाइयां विशेष उल्लेखनीय हैं।

यद्यपि छन्द में मलिक मुफर्रह का स्पष्ट रूप से कहीं उल्लेख नहीं है फिर भी यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि—जब मलिक मुफर्रह गुजरात का सूबेदार बन कर आया होगा तब उसने भी अपने पूर्ववर्ती सूबेदारों की परिपाटी को अपनाया होगा। ईडर हमेशा से ही सूबेदारों की आंख का कांटा बना हुआ था। वह अवश्य मलिक मुफर्रह की आंख में भी खटका होगा।

यह मलिक मुफर्रह सन् १३७७ में गुजरात का सूबेदार बन कर आया था। इसका असली नाम रास्तीखान था। इसके पिता का नाम मलिक फर्राहुलमुल्क था। यह फिरोजशाह का गुलाम था। इसे अच्छे कार्य करने के उपलक्ष में मलिक मुफर्रह की उपाधि दी गई थी। इसने सन् १३७७ से सन् १३९१ तक शासन किया। अतः रणमल्ल और मुफर्रह का युद्ध इसी समय हुआ होगा।[2]

रणमल्ल ने ईडर और मेवाड के बीच के 'भागर' प्रदेश के यादव वंशीय शासक को युद्ध में पराजित करके अपने अधीन कर लिया था और उसकी राजधानी भारलागढ में पर्याप्त समय तक स्वयं ने निवास किया था। तत्पश्चात् एक सोलंकी पटावत को वहां रख कर स्वयं ईडर लौट आया।[3]

कुछ भ्रांतियां

रणमल्ल छन्द में वर्णित युद्ध की तरह कुछ विद्वानों ने और भी तथ्यगत भ्रांतियां परिकल्पित की हैं—

रणमल्ल की विजय के सम्बन्ध में सन्देह करते हुए प्रो० म० मजुमदार मदवी ने उल्लेख किया है कि रणमल्ल छन्द को पढते समय थोडा प्रकाश डालने वाली एक अन्य घटना का उल्लेख मिलता है कि राजा की सहायता के लिए आया हुआ, राजा सातल

१ मम मोडिय महि मलिक मल्लू, हूं समरि विडारण मल्ल सल्लू ॥ ३४

२ डा० शर्मा व डा० ओझा—रास और रासान्वयी काव्य, पृ० २४५

३ श्री जोशी—ईडर राज्य नो इतिहास पृ० १०१

सम्भवतः पद्यों यह राजपूताने के सामर शहर का हाकिम था। यह कोई कम बात नहीं है। चांपानेर और ईडर के राजाओं के यहां उनसे पहले दो सौ वर्षों से यही परिपाटी चली आ रही थी कि वे बाहर के राजाओं की मदद लेकर गुजरात के हाकिमों से लड़ते थे। इससे गुजरात के सुल्तानों को अनेक बार मालवा, खानदेश और राजपूताना के दूसरे हाकिमों से अकारण ही लड़ाई लड़नी पड़ती थी। इससे ऐसा मालूम पड़ता है कि ईडर के राजा की फौज किले में से निकल कर बाहर के मैदान में लड़ने लगी तभी अकस्मात् पीछे से राजा सातल की फौज भी आ पहुंची। परिणाम यह हुआ कि मलिक मुफरह की फौज दो दुश्मनों के बीच आ गई और इसी से उसकी हार हुई।"[1] आश्चर्य तो इस बात का है कि मौ० स० नदवी सा० ने सामन्त को सामर का हाकिम बनाया है। जबकि वह जालोर के राजा कान्हडदे का भतीजा था। इसके अतिरिक्त जो तथ्य उपर्युक्त उद्धरण में प्रस्तुत किए गए हैं उनका रणमल्ल छंद में कहीं उल्लेख तक नहीं है। मौ० सै० नदवी द्वारा उल्लिखित (छंद ६२-६३ में) जालोर (स्वर्णगिरि) के चौहान शासक कान्हडदे द्वारा मुहम्मद गजनवी के कब्जे में से सोमनाथ महादेव की मूर्ति को छुड़ा कर उसे पुनः प्रतिष्ठित करने का उल्लेख हुआ है।

एक अन्य ऐतिहासिक पात्र के विषय में जानकारी देते हुए श्री केशवराम काशीराम शास्त्री ने लिखा है कि—"अब अन्य ऐतिहासिक पात्र के विषय में कवि जानकारी देता है। वह मुहडासिया मीर रहमानी है। मीर रहमानी इस समय मोडासा का थाणेदार था। 'दामहराम करइ सुरताणो' ऐसे सुल्तान का वेतन खाकर कुछ भी नहीं कर सकता था।'[2] शास्त्रीजी यदि उपर्युक्त उल्लेख करते समय मूल पाठ को अच्छी तरह से देख लेते तो उक्त भ्रांति की कोई सम्भावना नहीं थी। शास्त्रीजी द्वारा उद्धृत मूल पाठ महडासिया मीर रहमानी है जिसका अर्थ होता है—(रणमल्ल ने) सिया रहमानी मीरों को पराजित कर दिया और वह सुल्तान के दामों (Tribute) को नष्ट कर रहा है। यदि मूल पाठ में 'मुहडासा मीर रहमानी' संशोधन (जो कि उचित प्रतीत होता है) स्वीकार कर लिया जाय तो ऊपर का अर्थ और भी अधिक सुस्पष्ट हो जाएगा।

---

१ मौ० नदवी—'रणमल्ल छंद अने तेनो समय', पृ० १५ १६

२ कविचरित, भाग १ २, पृ० १८ १९

रणमल्ल छंद की भाषा

रणमल्ल छंद की भाषा प्राचीन राजस्थानी है। इसे कुछ विद्वानों ने जूनी गुजराती भी कहा है। रणमल्ल छंद के सृजन काल में वर्तमान की तरह राजस्थान एवं गुजरात के प्रदेशों में भिन्नता नहीं थी। राजकीय प्रशासनिक सीमा भेद को छोड़ कर सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से दोनों प्रदेश एक थे। सुदूर अणहिलपुर से अजमेर तक एक ही भाषा का प्रयोग होता था। वर्तमान तक उपलब्ध दोनों प्राचीन प्रदेशों का लिखित साहित्य एक ही है।

रणमल्ल छंद के रचयिता व्यास श्रीधर संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश देशीय भाषा के विद्वान थे तथा विदेशी भाषा (फारसी) की भी उन्हें जानकारी थी। अतः उनकी कृति में उक्त सभी भाषाओं का प्रयोग न्यूनाधिक परिमाण में मिलना स्वाभाविक है। छंद की प्रथम दस आर्याएं विशुद्ध संस्कृत में हैं। तत्पश्चात् का वर्णन यद्यपि देशीय भाषा में है, परन्तु उसमें परिनिष्ठित प्राकृत अथवा अपभ्रंश की शब्दावली का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

स्वर विकार

अ आ—असवार आसुर (असुर) असि असलीह। छंद २५
ई इ—ढोल गहिर (गभीर) ढमकत। " २२
उ अ—मुल्लह विरद (विरुद) बहुल। " ५०
ए इ—सु रणमल्ल इक्क (एक) मह बहू। " ११
ओ उ—हुसि हुसियार (होसियार) हुया हल हल करि " १८

व्यंजन विकार

ख ह—मूछ सिहरि (शिखर) फरकत। छंद २०
—तिम तिम ईडर सिहर (शिखर) थरि। " २२
थ ह—निहुटि (निघुट) थाटि काढ गढ घल्लि। " १७
भ ह—असुहर (अशुभ) ईडरह। " २०
—सुहड (सुभट्ट) सह समळिवि रउहड। " ४६
ध ह—तिम तिम योगिनि रुहिर (रुधिर) रसि। " ४६

ग ह—दहु (दश) दिसि फिरवि करि पुक्करागह। छ० ४६
—दहु (दश) दिसि पडरवेस पल्लट्टिय। " १७
ग य—निसि सभाइचि नयर (नगर) उधकइ। " १४
—तु गयणागणि (गगनागण) भाण न उग्गइ। " २६
—सायर (सागर) वेलि तरंग। " ५१
द य—मुक्क थिर कमल मेच्छ पय (पद) लग्गइ। ' २६
ट ड—सुहड (सुभट) सद्द समळिवि रउद्द। ' ४६
ति इ—जिम हम्मीर वीर सिमरवइ (समराधिपति) ' १२
न म—रणमल्ल दिट्ठेण ते ठाम (स्थान) चुक्कि। " ६७
प व—जिम हम्मीर वीर सिमरवइ (समराधिपति) " १२
ब व—रे रणमल्ल धाडि जव (जब) समळि। " १४
यु जु—उल्लाळवि झालवि जुज्झ (युद्ध) कमालह। " ५२
त्स च्छ—मू गळ मेच्छ मुहइ मच्छर (मात्सर्य) भरि। " १८
द्ध ज्झ—उल्लाळवि झालवि जुज्झ (युद्ध) कमालह। " ५२
ध्य ज्झ—मलिक मत्र मज्झिम (मध्यम) निसि विद्धउ। " २७
ब्द द्द—रउद्द सद्द (शब्द) भ्रा समुद्द साहसिक सूरह। " ४१
म्ले मे—मू गळ मेच्छ (म्लेच्छ) मुहइ मच्छर भरि। " १८
द्र द्द—रउद्द सद्द भासमुद्द (आसमुद्र) साहसिक सूरइ। ' ४१
द्रष्ट दिट्ठ—गोरी दळि गाहवि दिट्ठ (द्रष्ट) दहदिसि। " ५८
दुग दुग्ग—ईडर अडर दुग्ग (दुग) तळ गायु। ' ४६
दुजन दुज्जण—दुज्जण दवग्ग इक्क दावानळ हयमर। ' ५७
र ×—सतिरि सहस (सहस्र) साहणवइ साहण। " ११
र ण—पुण (पुन) फुरमाण (फरमान) भाण सुरताणी ~ ' १२
—लखि फुरमाण (फरमान) खान चल्लावि। " १६
—रहिउ हुई हैराण (हैरान) खुदालम। " १६
—दुज्जण (दुजन) दवग्ग इक्क दावानळ हयमर। ' ५७
—वेढि करि गज्जणवइ (गजनीपति) असुरइ। ~' १२
स्क क—ता कमधज्ज कंध (स्कंध) न धगइ नमइ। ' ३०
स्त त्थ—तू हट्टि उट्ठवणीह हट्ठ विणोह हत्थ(हस्त)लिज्जइ। '
स्था थ—आदर करि सकर थिर थप्पिय (स्थापिता)। ६३
स्था ठा—रणमल्ल दिट्ठेण ते ठाम (स्थान) चुक्कि। ' ६७
स्थि थि—आदर करि सकर थिर (स्थिर) थप्पिय। " ६३
ष्टि ट्ठि—मुट्ठि (मुष्टि) दळ घल्लइ। २६

छ्र म—बंमण (ब्राह्मण) बाम धरि बहु कीज्जिइ। छं० ४०
ठि ति—तु रणमल्ल दक्ख महु छिति (ठिति)। " १२
श, ष स—सवत्र प्रयुक्त।

रणमल्ल छंद की भाषा में जो सबसे बड़ी विशेषताएं उपलब्ध हैं वे हैं—विभक्ति रहित कारक एवं कारकों के लिए सम्बन्ध सूचक अव्ययों अथवा परसर्गों का प्रयोग। यही विशेषताएं इस भाषा को प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा से पृथक प्रमाणित करती हैं। यद्यपि निर्विभक्तिक कारकों का प्रारम्भ अपभ्रंशोत्तरकालीन अवहट्ठ में हो गया था परन्तु परवर्ती आयभाषाओं (विशेषकर राजस्थानी भाषा) में इसका प्रचलन बहुतायत से पाया जाता है। रणमल्ल छंद में अर्थ विभ्रम से बचने के लिए कवि ने जो सम्बन्ध सूचक अव्ययों अथवा परसर्गों का व्यवहार किया है वह भी राजस्थानी भाषा के अव्ययों अथवा परसर्गों के अति निकट है। उदाहरणार्थ कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं—

(अ) निर्विभक्तिक कारक

कर्त्ता—पुक्कारि मीर मल्लिक मुफरद। रणमल्ल छंद १६
—तिम तिम रणमल्ल रोस भरि। २४
—गयु खान खुद मगतमि चल्लिय। २६
—उच्चरहि सरस महुयर भुणिउ। स देश रासक २१६
—चारण कहइ। —अचलदास खीचीरी वचनिका
— देव दाणव लहि मूया। —राठौर रतनसिंघ महेशदासोतरी वचनिका
—जाणे नाद मांडियो जीपण वागहीण वागेसरी।
—वेलि सिरी किसन रुकमणी री ३
—पल्हसै जसोदा जिमै चक्रपाणी।
—नागदमण २

कर्म—भर धर थाणदार धरि कम्पइ। —रणमल्ल छंद ११
—हेला लाक्खब कुल्पावि। १६
—अचल राज चहुआण समप्पिय। ६१
—सिहि चढिउ पिक्खि मायद साह। —स देश रासक— २१२
—हस्ती मेलि चाल्यउ। —अचलदास खीची री वचनिका
—कवि रजपूत पोखिया काळं।
—वचनिका राठोड रतनसिंह महेश दासात री।
—परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि।
—वेलि सिरि क्रिसन रुकमणी री १

—जावो नागणी माग वगो जगाडो। —नागदमण ३७

करण—

—पखरि पक्खर पवन पखी। —रणमल्ल छंद २५

—सवि रणमल्ल करइ साह सिहुलि। " ३८

—जल रहिय मेह सतविञ काइ। —स देश रासक ११८

—विधि अणि गयो सग।

—बचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री।

—जाणे वाद माडियो जीपण वागहीण वागेसरी।

—वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री ३

—गळै प्रश्न पोपा खुरी खेह प्रेवा। —नागदमण ६१

सम्ब ध—

—मू छ सिहरि फरक्त। —रणमल्ल छंद २०

—भुजबलि सबल मुट्ठि वळ घल्लई। " २६

—करी चाकरी खान कर जोडिअ। " ७८

—जइ रणमल्ल पाम दम धुल्लइ। " २७

—हिव पट्टण पद्धरि धरि सुपय। " ३२

—सव पेक्खिसि मुह रणमल्ल बल। " ३५

—अगिहिं तुह मलहृत धिट्ठु करयल करिसु।

—सदेश रासक १११

—मुह ससि भोलग घ-ा मावइ। —राउल वेल २३

—कामणि करग सु धाण कामरा।

—वेलि सिरी क्रिसन रुक्मणी री २३

—घरघर [illegible]ग सघर सुपीन पयोधर। —वही २५

—सत्री मद्का कस रेयस सासी। —नागदमण ७४

अधिकरण—

—फुंगराई फूफू फार फारक फौजपरि फरमाणिमा।—रणमल्ल छंद १९

—पडर बैस पया निब्भय घर। " ४०

—अइ विम्म विओह विसुठ लय हियय। —सदेश रासक ११५

—तुठे फूल तारे मण हारे। —राउल वेल २० २१

—जोह जोह नव नवो रस। —वेलि सिरी क्रिसन रुक्मणी री ५

—इसो भाज ते कोण भूलोक आदे। —नागदमण ५७

रणमल्ल छंद

संबोधन—

—अरियणवारण ! वीन अभयकर ! —रणमल्ल छं० ४
—विद्रोह जोह तेहि नाथ ! " ४
—पा कमधज्ज धार करि लिज्जइ । " ४
—ता पहिय कम लिहि समए पाविज्जइ निव्वुइय तह निद्दा ।
—संदेश रासक ११
—पहिउ भणइ कणयंगि सयसु ज सुण्हि कहिउ ।
—वही ११

—पृथू बारहट !
—क्रिसन राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री ।
—पळियाँ घण मूक रयाळ सिघ बळि ।
—वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री ५
—प्राणी वछइ त वेलि पढि ।
—वही २७८
—कहे कीजिए का हू भील विभाग ।
—नागदमण ६

(आ) सम्बन्ध सूचक अव्यय अथवा परसर्ग

कर्ता—

इ—मिह्र सवरि समसुद्दीन कही । —रणमल्ल छंद ३
—आरंभ मैं कियो जेणि उपायो । —वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री १

कर्म—

अ—हम बोल्लइ हठि तोलत हुप । —रणमल्ल छंद ११
इ—चवलि चढी विहू दिसि चाहइ । १३

करण—

इ—भुजबळि सबल सुहि दळ चल्लइ । —रणमल्ल छं० २१
—धसि धगडामण धूस धरंतु । , ५६
—झडपइ पहवइ धगड धिडा । , ६१
—गोरी दळि गाहवि । ५८
—जब हेजब मुहि फरियाद सुणी । , ३७
—किरि कठवीत पुतळी निज करि ।
—वलि सिरी क्रिसन रुकमणी री २
अवि—हल एम्मार हुबकारवि वुल्लवि । —रणमल्ल छं० २६

—सिरि फुरमाण धरवि सुरताणी । —रणमल्ल छंद २८

करि—मडहड करि सत्तिरि सहस मडक्कइ । ' ६१

—मुख करि किमू कहीजै माहव ।

—वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री ६४

रसि—असि रसि गाह करइ गोरी दळि । —रणमल्ल छंद ५७

—तिम तिम योगिनि रुहिर रसि । " ४२

—जिम जिम लसकर लोह रसि । ' ४४

थडी—मरडी मूछ थडी मुहि मडइ । ' ६४

सम्प्रदान—

इ—सचरीय सब सुरताण साहण साहमी सवि सगरइ । —रणमल्ल छंद १६

—चमकिक चल्लि रणमल्ल मल्ल फेरि सगरि । ' ४८

—हर तिणि वदे गवरि हर । —वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री २६

—सामि कामि भजिमे देहा ।

—वचनिका राठौड रतनसिंघ महेसदासोत री

छळि—परक्कमधज्ज बीर मासन छळि । —रणमल्ल छंद ५४

—थमण बाल सुरहि भवला छळि । " ५५

—छट करइ छत्तीस छळि । " ६०

—टीलो राज घग छळ तोनू ।

—वचनिका राठौड रतनसिंघ महेसदासोत री

—जसवत छळि मोने जुडणि । —वही

अपादान—

सरिसु—असपति सरिसु विवाद । —रणमल्ल छंद ४२

—पहरवस सरिसु रणि । " ५८

—असपति सरिसु साह सिम बक्कइ । ' ६३

—मेच्छ सरिसु गहगाह न छडइ । " ६४

इ—वेढि करी गज्जणवइ असुरइ । ' ६२

सम्बन्ध—

इ—जब ऊठिसि हठि हक्कत रणि । —रणमल्ल छंद ३४

—जब चपिसि ईडर सिहरि तल । " ३५

ह—गई धरदास पासि सुरताणह । —रणमल्ल छंद ११

—तिम रणमल्लह रोस वधि । " २०

—छत्तीस कुलह वन सरिसि घणु । ' ३१

रणमल्ल छंद

—दस्माट्वि भातवि जुग्म कमालह । —रणमल्ल छं० ५३
तणु —पय मगिगु रा हम्मीर तणु । ' ५१
—हूं समरि विडारण मेच्छ तणु । ' ३४
—वहण तणी निति तणी वीरतन ।
—वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री ७
—रासो रणाअर तणो ।
—वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोतरी
रइ—मिह भागउ आगइ साम्हरइ । —रणमल्ल छं० ३२

अधिकरण —
इ—तिम समपञ्ज मू मुहि मुरयइ । —रणमल्ल छं० १२
—वैति दिसि दिसि दड़वडइ । २१
—सिरि फुरमाण धरवि सुरताणी । २८
—मल्लिक मन मज्झिम निसि भिडउ । २७
—वचण रक करि मेरु कर ।
—वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री ६
—जिण दोय जनम मुखि दे ओहा । —वही ७
—गाजे द्वारि गयदी ।
—वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री
मा—जि जुद्धा मुड्ढा सनद्धा मआदि । —रणमल्ल छं० ६८
हय—खित्तीय रोस बलि । ' ६०
तलि—धमलि धगड धरइ धरणी तलि । ' ३६
—ईडर मढर सिक्खरि रणभरि तलि । ' ५०
—खग्ग ताल जिम तोलइ करतलि । ' ६५
ह—असहू चढि चलिउ । २७

सर्वनाम
(१) हूं=मैं ।
कर्त्ता—हूं समरि विडारण मेच्छ तणु । —रणमल्ल छंद ३४
कर्म—मिह भागउ आगइ साम्हरइ । ' ३२
—मिह समरि समसुद्दीन नडी । ' ३३
—मम मोडिय मडि मल्लिक घणु । ' ३४
सम्बंध—मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ । " २६

—तव पविवसि मुह रणमल्ल बल । रणमल्ल छन्द ३५

—मम वरणमि मुणासिम दुन मुद्दि । " ३५

(२) तू=तू

कर्त्ता—तू हट्टि उट्ठवणीइ हट्ठवि । " ४३

सम्बन्ध—तु रणमल्ल इक्क नह बद्दू । " ११

(३) जि=जो

कर्त्ता—जि वु वाम वु वा उत्तमिक मल्ळविर । इत्यादि

छन्द ६६ ६७, ६८ ६६

(४) स=वह

कर्त्ता—तव हेजब फुग्माण स विद्धव । —रणमल्ल छन्द २७

—रणमल्ल स्ट्टि ते ठाम चुविय । " ३७

सम्बन्ध—विद्योहि जोई तेह नाथ । " ४१

क्रिया तथा कृदन्त

वर्तमान काल—

अइ—सचरइ सक सुरताण साहसी मवि मगरइ । —रणमल्ल छन्द १६

—तोलइ तरळ तुखार । " २४

—पसरइ पडर वेम भयकर । " ३८

—धा कमधज्ज धारि करि लिज्जइ । " ४०

—"र्चि काठिहि सोहइ । लोवह ची दिठि माड ची खोहइ ।

—राउल वेल ७

—वसुधा थळि थळि जळ वसइ ।

—वेलि सिरी क्रिसन रुक्मणी री, १६७

रमै सग गोवाळिया रग राती । —नागदमण ११

—सीह कवहडी न लहइ । —अचळदास खीचीरो वचनिका

विशेष—छद म प्रयत्न दर्शनात्मक वर्णन होने से वर्तमान कालिक क्रियाओं की बहुतायत है जिनम 'अइ' प्रत्यांत क्रियाओं का प्रयोग पर्याप्त मात्रा मे हुआ है।

ऊ—पुणू रणरस जाण जरइ जडी । —रणमल्ल छन्द ३१

—वाखाणू कमधज्ज पुहवि राजा छत्रपती ।

—वचनिका राठौड रतनसिंह महेस दासोतरी

—बन वो सागर वरणवू । —नागदमण १

अत—मू छ सिहरि फुरकत । —रणमल्ल छन्द २०

—किसन पधारया लोक कहति ।

—वेलि सिरी क्रिसन रुक्मणी री ७२

प्रतु—नवपरि पण्डरवस भिड तु, घसि घगडायण घ ॥ घरतु ।
—रणमल्ल छंद ५६

भूतकाल—

अ—समदळ दहु दिसि विद्ध डहल्लिय । —रणमल्ल छंद २६
यउ—मलिक मत्र मज्झिम निसि किद्धउ तव हेजब फरमाण ॥ दिद्धउ ।
—रणमल्ल छंद २७
या—हसि हुसियार हुया हल हल करि । —रणमल्ल छंद १८
—हय हेडवि सवि हेजब गया । ३६
—हयमर वेगि गया ईडर तळि । ३८
—वहि वलिन मल्लिक सलाम किया । ३६
—पड्डर वेस थया नि मय घर । ४०
—केवाणा पाई सुगह किया ।
—वलि सिरी क्रिसन रुक्मणी री १२७
—केसिया दळ तडळ जेणि किया ।
—वचनिका राठोड़ रतनसिंह महेसदासोत री १२७
—विधि ऐणि गयो जग कीति वरे । —वही
—उळिगाणा मागी हुवा । —अचळदास खीचीरी वचनिका
—प्रभू घणा भा पाडिया । नागदमण २
इ, ई—गई अरदास पासि सुरताणह । —रणमल्ल छंद ११
—लवि फुरमाण खान चल्लावि । १६
—तव धमनि ढमकिर मलिक करी । ३७
—घसि धाहिद धायउ धूस धरी । ३७
—जव हेजब मुहि फरियाद सुणी । ३७
—धमकिक चल्लि रणमल्ल । ४४
—मसपति दळ कोलाहल समळि । ४४
—भ्यारि जुगि कथा रही वेग्यास वाल्मीक कही ।
—वचनिका राठोड़ रतनसिंह महेसदासोत री
—स्वामी कनक आयो सुणण । —अचळदास खीचीरी वचनिका
—पुठी न र नीगार आयो प्रहट्ठं । —नागदमण ७
इउ—ईडर गढि मसमद चढि चल्लिउ, जइ रणमल्ल पासि इम बुल्लिइ ।
—रणमल्ल छंद ५६
—नाम मिळिउ हरि जम तण जिम । —रणमल्ल छंद २७

मउ – मिहु भगगउ भ्रगइ खगरइ । —रणमल्ल छंद ३२
उ—गयु खान खुद नग तळि चल्लिम । " २६
—खान खवास खेलि बलि घायु । " ४६
—ईडर अडर दुग्ग तळ गाहुयु । " ४६
म—हय हय हुकारवि हयमरि चडय । " ५८
प्रता – जि बक्का मरक्का सरक्का वह्ता । " ६६
—जि सग्गा सगब्बा भरब्बा सहन्ता । " ६६
प्रतिम – हुल हल बिगरी विपरी बोलतिअ । " ५१
अतु—पक्खरि पक्खरवस भिडतु । " ५६
—घसि घगडायण घूस घरतु । " ५६
ग्राणी—गह गुज्जार निमाज कराणी । " ४८
विशष— अइ' व अई प्रत्यात भूतकालिक क्रियामों के रूप भी उपलब्ध हैं ।

भविष्यत् काल —

मइ अई—मुझ मिर कमल मच्छ पय लग्गइ तु गयणगणि भाण न उग्गई ।

—रणमल्ल छंद २६

—जा अबर पुडळि तरणि रमइ ता कमधज्ज म धगड नमइ ।
वरि वडवानळ तण माळ समइ पुणमेच्छन आपू चास किमइ ।
—वही, ३०

ऊ—पुण मेच्छ म आपू चास किमइ । —रणमल्ल छंद ३०
इसि—मम वरणिसि मुणमिम दूत मुहि । " ३५
—जब चपिसि ईडर सिहरि तल । " ३५
—तब पेखिसि मुह रणमल्ल बल । " ३५
—जब ऊठिसि हठि हक्क रणि । " ३४
—जब मंडिसि मुझ रणमल्ल सम । " ३३
—तव देखिसि ससंहरि सरिसु जम । " ३३
—तइ सउ हथियार पाविस काहडदेउ जगही काइ करिसी ।
—राउलवेल ४२
—राए लगइ पइ राइवळि वोरजी बखाणिसी ।
—अचळदास खीची री वचनिका
—वात रहिसी । वचनिका राठोड़ रतनसिंह महेसदासोत री
—हरं मावजो जागसी जाम भीज । —नागदमण ६६
इसु—छत्तीस कुलह बल करिसु भगू । —रणमल्ल छंद ३१

रणमल्ल छंद

—पय मग्गिसु रा हम्मीर तणू । रणमल्ल छं॰ ३१
—नइ विनडिसु सत्तिरि सहस सय । ३२
—हिव करिसु धरा रणमल्ल मय । ३६
—नि कहिसु तासु जमु अहि थाको कहि ।
—वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री २७२

आज्ञार्थक—

इय—दहु दिसि पहरवेस पलट्टिय । —रणमल्ल छं॰ १७
इ—निहुटि वाटि वाटि गइ घल्लि । " १७
—बल बुल्लिय वलिल मल्लिक कहि । , ३५
अइ—या कमधज्ज धार करि लिज्जइ । ४०
—मेच्छ लोडि लिज्जइ । , ४१
—लोह हत्थइ लिज्जइ । , ४३
—लोहि गाहन किज्जइ । , ४३

संयुक्त—

—ईडर गढि अस्सइ चढि चल्लिउ । रणमल्ल छं॰ २७
— मेच्छ लोडि लिज्जइ । ४१
—लोहि गाहवि किज्जइ । , ४३
—दहु दिसि लिखी करि पुक्कारहू । ४६

अव्यय-क्रिया विशेषण

(अ) कालवाचक

हिव=अभी—हिव पट्टणि पद्धरि घरि सुपय ।
—हिव किरमाल पहारि । रणमल्ल छंद ३२
तव=तब—तव देखिसि लसकरि सरिसु जम । , ७०
—तव न गणू त्रण सुरताण तणि । , ३३
—तव पेखिसि मुह रणमल्ल बल । ३४
—तव चमकि झमकि मल्लिक मरी । ३५
जव=जब—रे रणमल्ल धाहि जब समल्हि । *७
—जव मडसि मुभ रणमल्ल सम । १४
—जव ऊठिसि हठि हक्कस रणि ३३
—जय चंपिसि ईडर सिहर सल । ३४
— जव हेजव मुहि फरियाम सुणी । , ३५
जां=जब तक—जां अबर पुड तलि तरणी रमइ । , ३७
, ३०

रणमल्ल छं॰

ता=तव तक—ता कमधज्ज न धगड नमई। रणमल्ल छंद ३०

(आ) स्थानवाचक

अग्गई=आगे—मिइ भग्गउ अग्गइ खग्गरइ। " ३२

जा=जहा पर—जा रणमल्ल रोस वसि चढ्डिय। " ६४

(इ) परिमाणवाचक

घणू=बहुत—छत्तीस कुलह वल करिमु घणू। " ३१

—मम मोडिय मडि मल्लिक घणू। " ३४

बहु= ,,—बहु बमवाक करइ बाहु बलि। ३६

—बमण बास वदि बहु किज्जइ। " ४०

बहुत्त= ,,—युल्लइ विरद बहुत्त। " ५०

मफरद=एकाकी—फुकारि मीर मल्लिक मुफरद। " १६

—धममस घूस करइ मफरद्दह। " ४६

अनेकि=अनेक—इम अनेकि मलिक्क विहड्डइ। " ६५

सवि=सब—साहमी सवि सगरइ। " १६

—अगर गरास दास सवि छाडिय। " २८

—रूप हेडवि सवि हेजब्ब गया। " ३६

—सवि रणमल्ल करइ साहु सिहुलि। " ३८

(ई) रीतिवाचक

इम=इस प्रकार—जइ रणमल्ल पाम इम बुल्लिव। रणमल्ल छंद २७

—इम बोलइ हठि तोलत हय। " ३६

किमइ=किसी भी प्रकार—पुण मेच्छ न आपू वास किमइ। " ३०

जिम=जिस प्रकार, जैसे—जिम हम्मीर वीर सिभरवइ। " १२

—समुहरि जिम चमक्त। २०, २२

—जळहर जिम सीगणि गुण गज्जइ। " ३६

—ताल मिलिउ हरि जम तणउ जिम। " ५६

तिम=उसी प्रकार, वैसे—तिम कमधज्ज मूछ मुहि मुरकइ। " १२

—तिम रणमल्लह रोम वसि। " २०

जिम जिम=ज्यों ज्यों—जिम जिम कमधज चीतवई। " ४२

—जिम जिम ससकरि लोह रगि। " ४४

तिम तिम—वैसे-वैसे—तिम तिम ईडर सिहर वदि। " २२

—तिम तिम योगिनि रहिर रचि। " ४२

—तिम तिम समरि कडकिय। ४४

दिगंतर=दिगन्तर—सर गोवरार कहिं निरंतर। रणमल्ल छं० १८

(उ) अव्यय

नन=नहीं—नु ववनंतनि मान न आवइ। ' २६

—नुन मेवन म मानु नान विवइ। ३०

—नव म मिनु नन मुरतान तनि। ३४

नइ=और—नइ विरहिनु नतिरि सहस सर्व। ३२

नहु=नहीं—नु रणमल्ल इकर नह बहु। ' ११

बउ=पुन—घट्ट मुनिवन वलि मग्गिय करहि। ' ३५

विशेषण

(अ) गुणवाचक

अमल (५८) अलवीई (२५), धनी (६६), गरुड़ (२४) दारुण (१२) दुद्दम (४३) भयङ्कर (३८) मारिम (२६) मड (५२) मल्ल (५१) टोडरमल्ल (६१)

(आ) संख्यावाचक

इक्क (११ ५४, ५७ ६५, ७०), नव (३४) विहु (१३) नव (५४) दह (४६) सतिरि (११ ४६) छत्तीस (३१ ६०) सितरिसि (५२) सहस (११, ४६)

विशेष—पुरुष तथा निजवाचक सर्वनामों को छोड़ कर अन्य सर्वनामों का प्रयोग विशेषणवत् पाया जाता है।

रणमल्ल छंद का साहित्यिक महत्त्व

काव्यत्व

इतिहास एवं भाषा के सदृश साहित्य की दृष्टि से भी रणमल्ल छंद एक उत्कृष्ट कृति है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से यह खंडकाव्य की कोटि में आता है। खंड काव्य भी प्रबंध काव्य का ही एक भेद है परन्तु इसमें महाकाव्य का सा विस्तार नहीं होता बल्कि नायक के जीवन से संबंधित किसी एक घटना का वर्णन रहता है। शास्त्रकारों ने काव्य का विश्लेषण करते हुए खंडकाव्य का लक्षण इस प्रकार दिया है—

खंडकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।[1]

अर्थात्—काव्य अथवा महाकाव्य के कतिपय लक्षणों से युक्त जो पद्य प्रबंध है उसे खंडकाव्य कहा करते हैं। रणमल्ल छंद में काव्य अथवा महाकाव्य की कतिपय विशेषताएं उपलब्ध हैं। यथा—

१ नायक धीरोदात्त गुणों से युक्त एक कुलीन क्षत्रिय राजा है।
२ समस्त काव्य वीर रसान्वित है।
३ इसका कथानक विशुद्ध ऐतिहासिक है।
४ विजयश्री फल के रूप में प्राप्त है।
५ प्रारम्भ में नमस्कारात्मक एवं आशीर्वादात्मक मंगलाचरण विद्यमान है।
६ युद्ध का सांगोपांग वर्णन हुआ है।
७ काव्य का नामकरण नायक के नाम पर हुआ है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण पर दृष्टिपात करने से रणमल्ल छंद का खंडकाव्यत्व असंदिग्ध प्रतीत होता है।

युग चित्रण

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि कवि तत्कालीन समाज का प्रतिनिधित्व करता है। वह समाज में परिव्याप्त अच्छाइयों एवं बुराइयों से प्रभावित होकर ही काव्य प्रणयन के लिए अग्रसर होता है। यदि वह कवि अपने युग की स्थिति से संतुष्ट होगा तो उसकी प्रशंसा करेगा, और असंतुष्ट होगा तो उसके प्रति क्षोभ प्रकट करेगा। इस प्रकार दोनों स्थितियों में कवि की कृति में युग का प्रतिबिम्ब अनिवार्य रूप से दृष्टिगोचर होगा।

---

१ विश्वनाथ—साहित्यदर्पण, षष्ठ परि० ३२९

रणमल्ल छन्द का सर्वप्रधान सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक दृष्टि से अति महत्व का है। उस युग की परिस्थितियाँ और आज वर्तमान की परिस्थितियों में आकाश पाताल से भिन्न थे। यद्यपि भारत की पर्याप्त भूमि पर मुसलमानों का अधिकार हो गया था फिर भी रणमल्ल जैसे स्वातन्त्र्य प्रेमी नरेशों की कमी नहीं थी। मुसलमान शासकों को यह असह्य था तथा वे इस प्रकार के शासकों को हर सम्भव दबाने के लिए प्रयत्न करते रहते थे। उनकी इस राज्य विस्तार लिप्सा की शिकार स्वातन्त्र्य प्रेमी शासक की प्रजा होती थी। छन्द में युद्ध में मस्त मुगल सैनिकों द्वारा पीड़ित प्रजा का वर्णन हुआ है। प्रजाजन अपने रक्षक शासक के समक्ष पुकार करते हैं—

विवहर भरि सु बारव बज्जइ जळहर जिम सीगणि गुण गज्जई।
बहु बलराय घरइ बाहुब्बलि, थघलि थगड घरइ धरणी तळि॥
अरियणदारण! दीन अभयकर! पडरवेस यवा निब्भय घर।
वभण नाल वदि जहु किज्जइ, धा कमधज्ज! धार करि लिज्जई॥

रउद सद्द आसमुद्द साहसिक्क सूरइ।
कठोर घोर घोर छोर पारसिक्क पूरइ।
अहग गाम गेह गाहि गालिबाल किज्जइ।
बिछोहि जोइ तेह नाथ! मेच्छ लोडि लिज्जइ॥

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि—तत्कालीन आततायी मुगल सैनिकों के लिए ग्राम व निवासों को जला देना मंदिर व मठों को नष्ट कर देना ब्राह्मण व अबलाओं को बंदी बना लेना तथा मारकाट करना एक सामान्य बात थी।

स्वातन्त्र्यप्रेमी हिन्दू शासक अपने राज्य लोभ को गौण समझ कर गौ, ब्राह्मण अबलाओं एवं संस्कृति की रक्षा को प्रधानता देते थे। छन्द में स्थान स्थान पर इस प्रवृत्ति का उल्लेख हुआ है। सीमित साधन होते हुए भी रणमल्ल के 'मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ तु गयणङ्गणि भाण न उग्गइ' कथन में संस्कृति पोषक तत्वों को देखा जा सकता है। इस प्रकार के शासक यथावसर मुगल शासन से अनुशासित प्रजा को लूटना विभिन्न स्थानों के थानेदारों को भगा देना तथा राजकीय कोष को लूट लेना अपना कर्त्तव्य समझते थे। छन्द के प्रारम्भ में इसका वर्णन उपलब्ध है।

इस प्रकार रणमल्ल छन्द के संक्षिप्त वर्णन में भी तत्कालीन युग की विभिन्न परिस्थितियों की झांकी दृष्टिगोचर होती है।

रस

रणमल्ल छंद में एक युद्ध चरितात्मक काव्य होने के नाते वीररस का पाया जाना स्वाभाविक ही है। परन्तु इसमें जिस प्रकार से वीररस की निष्पत्ति हुई है 'अन्य काव्यों

में दुलभ है। कथा का श्रीगणेश रणमल्ल के वीरतापूर्ण हृदय के साथ होता है। पाठक उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्कण्ठित होता हुआ आगे बढता है, उसके साथ साथ कथा भी अपने प्रबल वेग के साथ बढती जाती है। अन्ततोगत्वा रणमल्ल की विजय दुदुभि और मुगलों के पलायन की दयनीय दशा के साथ रस परिपक्व होकर पाठक के अंतःचेतन को आनंदित कर देता है और वह पाठक ऐसी अनुभूति करता है मानो वह कथानक काव्यरूप म नहीं बल्कि साक्षात् रूप से देख रहा है। वीररस के अतिरिक्त किसी भी प्रकार के रस को निष्पन्न न होने देना, कवि की अतिरिक्त विशेषता है।

अलकार

रणमल्ल छद म शब्दालकार एव अर्थालकार दोनों तरह के अलकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। जिनमें शब्दालकारों का बाहुल्य है। ऐसा कोई भी छद नहीं है जिसम अलकार का प्रयोग न हुआ हो, फिर भी कवि का अलकारों को लाने के लिए दुराग्रह नहीं है। भाषा के प्रवाह म जितने भी अलकार अनायास आगए वे आगए।

छेकानुप्रास यह शब्दालकार है। जहा अनेक वर्णों की अर्थात् व्यजनों की एक बार स्वरूप और क्रम से आवत्ति हो वहा छेकानुप्रास होता है। इस अलकार का छद मे सफल प्रयोग हुआ है।

फू गराइ फू फू फार फारक, फौज फरि फुरमाणिया।
हुकार कर कढि कर शार कढि, करवि करि कस्माणिया॥ १६

वृत्यनुप्रास यह भी शब्दालकार है। जब अनेक व्यजनों की स्वरूप मात्र से एक बार या अनेक बार समता हो या अनेक वर्णो की आवत्ति स्वरूप और क्रम दोनो प्रकार से कई बार समता हो अथवा केवल एक वर्ण की अनेक बार आवत्ति हो तो वृत्यनुप्रास अलकार होता है। यथा—

उदा० १ फुर फुरहिं लम्ब अलम्ब अम्बरि नेज निकर निरतर।
भर भरहिं भेरि भयङ्क भूकर भरलि भूरि भयङ्कर।
दडदडो दडदड कारि दडवड देसि दिसि दिसि दडवडइ।
सचरइ शक सुरताण साहण साहसी सवि सङ्गरइ॥ २१

२ दम दम कार दमाम दमकइ, ढम ढम ढम ढम ढोल ढमक्कइ।
तरवर पडरवेस पहट्टइ, तरतर तुरक पडइ तलहट्टइ॥ ४७

३ गोरीदल गाहवि दिट्ठ दह्दिसि गढि मढि गिरि गह्वरि गडिय।
हणहणि हक्कतउ हु हु हय हय हुकारवि हयमरि चडिय।
घडहडतउ घडि कमघज्ज धरातलि धसि धगडायण घूस घरइ।
ईडरवइ पडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ॥ ५८

अन्त्यानुप्रास यह भी शब्दालकार है। जब छद के अत में अनुप्रास होता है तब

मध्यानुप्रास कहलाता है। इसके कई भेद होते हैं। रणमल्ल छन्द में सर्वान्त्य, समान्त्य और समविषमान्त्य अनुप्रासों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण सर्वत्र उपलब्ध है।

उपमा यह अर्थालंकार है। जहां परस्पर भेद रहते हुए उपमेय का उपमान के साथ सादृश्य का वर्णन हो, वहां उपमालंकार होता है। इसके पूर्णोपमा और लुप्तोपमा दो भेद होते हैं।

उदा० १ जब मंडिसि मुझ रणमल्ल सम, तब देखिसि ससकरि सरिसु जम।
—छ० ३३

२ तुक्खार तार तत्तार तेजी तरल तिक्ख तुरङ्गमा। —छ० २५

३ जलहरि जिमि सिंगणि गुण गज्जइ। —छ० ३६

रूपक यह भी अर्थालंकार है, जहां उपमेय को कह कर उसमें उपमान का अभेद आरोपित कल्पित हो, वहां रूपक अलंकार होता है।

उदा० १ सीचाणउ रा कमधज्ज निरग्गल, झडपइ घडवड धगड चिडा।
भडहड करि सत्तिरि सहस भडकई, कमधज भुज भडवाय झडा।
—छ० ६१

२ कमधज उदयगिरि मंडण सविता। —छ० ५३

३ असि मारवि रूम्ब रणायरि, रगडिअ भजइ धगड महाभडया।
—छ० ५६

४ तिभूआ खाडीया घडी दड किज्जि। —छ० ६८

५ मुझ सिर कमल मेच्छ पय लगई। —छ० २६

६ पडविक मागि पक्कडंत मारि मीर मक्कडा। —छ० ४५

अतिशयोक्ति यह भी अर्थालंकार है। जहां किसी वस्तु का बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया जाय वहां 'अतिशयोक्ति' अलंकार होता है।

उदा० हयखुरतल रेणइ रवि छाहिउ। —छ० ४६ इत्यादि

छन्द

रणमल्ल छंद के सत्तर पद्यों में—१० आर्या, २७ चुप्पई, ५ सारसी, ५ दूहा, ८ सिंहविलोकित, २ पंचचामर, ४ हाटकी, ४ दुमिल, ४ भुजंगप्रयात और एक छप्पय। इस प्रकार दस प्रकार के मात्रिक, वार्णिक एवं मिश्र जातीय छंदों का प्रयोग हुआ है।

आर्या यह अपभ्रंश वाङ्मय में सर्वाधिक व्यवहृत होने वाला छन्द है। इस छन्द के पूर्वार्द्ध में सात गण [चतुष्कल] होते हैं। किन्तु विषम स्थान पर कदापि जगण नहीं होता। षष्ठ स्थान में जगण अथवा नगण एक लघु का विकल्प

होता है। यदि षष्ठ स्थान मे चतुर्लघु रूप गण हो तो उस गण के द्वितीय लघु रूप से प्रथम गण के अंत में यति होती है, पर तु षष्ठगण से परे सप्तम गण चतुर्लघुरूप हो तो उसके प्रथम लघु के पूर्व विराम दिया जाता है। द्वितीय अर्द्ध का ऐसा लक्षण है कि यदि पंचम गण चतुर्लघु रूप हो तो पंचम गण के पूर्व यति करनी चाहिए। किंच आर्या के उत्तरार्द्ध म नियम से षष्ठगण एक लघु एक मात्रा रूप ही होता है, चतुर्मात्रिक नहीं। इतना ही पूर्वार्द्ध से उत्तरार्द्ध की विशेषता समझें।[1]

आर्या छद को ही प्राकृत पैंगलम् में गाथा कहा गया है जिसके लक्षण भी उपयु क्त आर्या के लक्षणों क समान ही हैं।[2]

हिन्दी भाषा के कवियों ने इस छद का प्रयोग प्राय कम ही किया है फिर भी सवथा अनप्रयुक्त नहीं है। उदाहरणाथ रामचरित उपाध्याय की यह आर्या ली जा सकती है।

१ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ ज । ७ ग
कवि निधन भी होकर शठ की सेवा कभी न करता है।
१ । २ । ३ । ४ । ५ ६ ल । ७ ग
रत्नाकर मे जाकर, हस कभी क्या विचरता है॥

चुप्पइ यह तद्विक जाति का सम मात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण मे पन्द्रह मात्राए होती हैं। अत म एक गुरु तथा एक लघु होता है।

विशेष—प्रस्तुत का म मे प्रयुक्त चुप्पइ चरणाकुलक की तरह प्रयुक्त हुई है। प्राचीन कवि १६ मात्रा के छद को भी चुप्पई कहते थे।

---

१ लक्ष्म तत्सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे ज।
षष्ठोऽयं न लघूवा प्रथमेऽत्र नियतमार्याया॥
षष्ठे द्वितीयलात्परके ले मुखलाच्चसयति पद नियम।
चरमेऽर्ध पचमके तस्मादिह भवति षष्ठोल॥
—वृत्तरत्नाकर २ अ० श्लो० १ २

२ पढम बारह मत्ता बीए अट्ठारहेहिं सजुत्ता।
जह पढम तह तीअ दह पच विहूसिया गाहा॥
सत्तगणा दीहता जो ण लहू छट्ठ णेह जो विसमे।
तह गाहे बि अ अद्धे छट्ठ ण्लहुअ वियाणेहु॥
प्राकृत पगलम्, १ ५४ ५६

रणमल्ल छद

सारसी — यह मात्रिक जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में सत्ताइस मात्राएं होती हैं। अंत में एक गुरु तथा एक लघु होता है तथा सोलह ग्यारह पर यति होती है। इस छंद का अपर नाम 'कबीर' भी है।

दूहा — यह अर्द्ध सम मात्रिक छंद है। अपभ्रंश काल से लेकर वर्तमान काल तक के कवियों ने इस छंद का सर्वाधिक व्यवहार किया है। इसके प्रथम चरण में तेरह मात्रा द्वितीय चरण में ग्यारह मात्रा फिर तीसरे और चौथे चरण में क्रमशः तेरह और ग्यारह मात्राएं होती हैं।[1] इसके विषम चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए।

सिंहविलोकित — यह मात्रिक जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में विप्रगण (चतुष्कल सर्वलघु) तथा सगण चार बार (१६ मात्राएं पूरी करते हैं)। इस छंद के किसी भी चरण में जगण, भगण या कर्ण (द्वि गुरु चतुष्कल) कभी नहीं रखना चाहिए।[2]

पंचचामर — यह वर्णिक जाति का समवर्णिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण रगण पुनः जगण, रगण के उपरान्त एक जगण और गुरु होता है।[3]

हाकली — यह महायौगिक जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में २९ मात्राएं होती हैं। अन्त में एक गुरु और एक लघु रहता है। दस आठ और ग्यारह पर यति होने पर इसे 'मरहट्टा' कहा जाता है।

दुर्मिल — यह लाक्षणिक जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएं होती हैं। अंत में कर्ण (द्विगुरु चतुष्कल) होता है। दस, आठ और चौदह पर यति होती है। पद में विषम स्थान पर जगण (गुरुमध्य) तथा बीच में विप्र (सर्वलघु चतुष्कल) तथा पदाति (सामान्य चतुष्कल)

---

१ तेरह मत्ता पढ़म पअ, पुण एआरह देह।
पुणु तेरह एआरहइ दोहा लक्खण एह॥
—प्राकृत पैंगलम्, १ ७८

२ गण विप्प सगण धरि पअह पअ,
भण सिंहविलोअण छंद वर।
गुणिगण भण बुज्झहु णाअ भणा
णहि जगणु ण भगणु ण कण्ण गणा।
—प्राकृत पैंगलम्, १ ८३

३ जरौ जरौ जगाविदं वदन्ति पंचचामरम्।
—वृत्तरत्नाकर, ३ ८६

दिया जाता है।[1]

भुजगप्रयात — यह जगती जाति का समवर्णिक छद है। इसके प्रत्येक चरण म चार यगण होते हैं।[2]

छप्पय — इस छद के आदि मे रोला के चार पाद और अत मे उल्लाल के पूव दल तथा उत्तर दल होते हैं।[3] प्रस्तुत छप्पय म २८ मात्राओं का उल्लाला प्रयुक्त हुआ है।

विशेष — प्रस्तुत काव्य के छन्दो म कुछ स्थानों पर नियम सम्बन्धी शिथिलता भी दृष्टिगोचर होती है।

वर्णन-शैली

रणमल्ल छन्द एक वीर रसात्मक चरित काव्य है। रणमल्ल क प्रदम्य पौरुष का वर्णन ही कवि को अभीष्ट है। फलत वह इस काव्य मे वर्णनात्मक शैली अपना कर चला है, जिसमे रसानुकूल ओज तथा अविरल वेग गुण सहज ही आगए हैं। कवि का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। वह कवि के हृदयगत भावो का अनुसरण करती हुई सी प्रतीत होती है। काव्य कलासम्पन्न होने के कारण कवि ने अपने नायक क चरित्र-बल की रक्षाथ उसके प्रतिद्वद्वी के चल चित्रण म भी कोताई नहीं बरती है। यद्यपि कवि ने इस काव्य को वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है पर तु पत्र प्रसग एव परिसवादो के प्रयोग ने इस शैली मे अद्वितीय छटा उत्प न कर दी है। इस अल्पकाय काव्य म दो पत्र एव आठ परिसवाद आए हैं। यथा—

पत्र—छद ११ से १५ तथा १७

---

१ सीस दुइ मत्तह एरि सजुत्तह बुहयण राय भणति णरा।
विसम तिअ ठामहि एरिस भासहि पअ पअ दीसइ कण्ण धरा
ता दह पढम ठटावे अट्ठ अ तीअ चउद्दह किम णिलओ,
जो एरिस छन्दे तिहुअणवदे सो जण बुज्झउ दुम्मिल ओ॥
दह वसु चउद्दह विरइ करु, विसम कण्ण गण देहु।
अतर विप्प पइक्क गण दुम्मिल छन्द कहेहु॥

—प्राकृत पगलम् १ १९६ १९७

२ भुजङ्ग प्रयात भवेद्य श्चतुर्भि ।

—वत्तरत्नाकर, अ० ३ श्लो ५५

३ रोला के पद चार, मत्त चौबीस धारिए।
उल्लाला पद दोय, अत मार्हीं सुधारिए॥

—श्री परमेश्वरान द छद शिक्षा पृ ७०

परिसंवाद—

१ शाह ग्यास संवाद । छं० २६
२ दूत रणमल्ल । छं० २८
३ रणमल्ल दूत , । छं० २६ ३५
४ मलिक दूत , । छं० ३६
५ प्रजा रणमल्ल । छं० ३८ ४१
६ योगिनियों द्वारा प्रशस्त शिक्षा । छं० ४३
७ शाह सिंघ पातशाह संवाद । छं० ६३ ६६
८ रणमल्ल का स्थापन । छं० ७०

अनुरणनात्मक शब्द प्रयोग

रणमल्ल छंद की अन्य काव्यगत विशेषताओं के साथ साथ उसके अनुरणनात्मक शब्द प्रयोग भी एक विशेषता है। ध्वन्यात्मक शब्दानुरणन से वर्णन चित्रोपम साकार बन जाता है। अपभ्रंश कालीन अन्य काव्य कृतियों में भी इस प्रकार के प्रयोग दृष्टिगोचर होते हैं,[1] परन्तु उनमें रणमल्ल छंद जैसा नाद सौन्दर्य एवं प्रवाह नहीं मिलता। कवि ने विभिन्न योद्धाओं की हुंकारों के अतिरिक्त युद्ध वाद्यों एवं शस्त्रास्त्र प्रवाह की सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनियों का उल्लेख किया है जो कवि की सूक्ष्मावलोकन दृष्टि का परिचायक है।

युद्ध वाद्यों के शब्द

[अ] ढोल गहरि ढोल ढमकत । —छं० २२
ढम ढम ढम ढम ढर ढर ढोल ढाली अगिया । —छं० २३
ढम ढम ढम ढम ढोल ढमक्कई । — ४७

---

१ [अ] तडि तडयडइ पडह घण गज्जइ ।
जाणइ राम हो सरणु पवज्जइ । —म० पु०

[आ] तोडइ तडत्ति तणु बंधणइ मोडइ कडत्ति हड्डइ घणइ ।
फाडइ चडत्ति चम्मइ चलइ घट्टइ घडत्ति सोणिय जलइ ॥
—जस० च० २ ३७ ३४

[इ] झिरिमिरि झिरिमिरि झिरमिरि ए मेहा वरसंति ।
—सिरि थूलि भद्द फाग

[ई] खुर खुर खुदि खुदि महि घघर रव कलइ
ण ण णण णण गिनि करि तुरय चले ।
—प्राकृत पैंगलम

[आ] भेरि   भर भरहि भेरि भयंकर भूकर भरलि भूरि भयंकर। —छ० २१

[इ] दमामा   दम दम करि दमाम दमक्कई । छ० ४७

[ई] घौंसा   घसमस घुस करइ भफरद्दह । —छ० ४६

[उ] दडवडी   दड दडी दड दड कारि दडवड देसि दिसि दिसि दडवडई । छ० १

[ऊ] काहल   कलकलहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थर थरई । —छ०२३

वीर हक्क

[अ] बिबहर बुम्बअ बुम्बअ बक्कइ । छ १३

[आ] हसि हुसियार हुया हल हल करि । छ १८

[इ] हुंकार कर कडि करइ सर झडी करवि करि कम्माणिया । छ १६

[ई] फुक्कारि मीर मलिक मुफरद मूछ मरडी मच्छरइ ।

[उ] बुल्लइ हठि हेअव हक्कारिम । छ २१

[ऊ] हल हल विगरी बिगरी बोलन्तिम मीर लहरि छिलन्त । छ० ५०

[ए] हणु हणि मुणसिम भणइ असभम । छ० ५६

मुगल सैन्य

मद भींभळ सेरखघा बगाळी मूगळ महामलिक्क ।
ईडर अद्धर सिकन्दरि रणथम्भरि तळि तरवरइ तुरक्क ।
हक्कारवि विकट बहक्कटि चल्लइ बुल्लइ विरद बहुल।
सुरताण सरिस सिलार सिपाही सवि मिळि समरि पुहुत्त ॥ छ ५०

रणमल्ल प्रयाण

गोरीदळ गाहवि दिट्ठु दहदिसि गढि मढि गिरि गह्वरि गडिय ।
हण हणि हक्कन्तउ हु हु हय हय हुंकारवि हयथरि चडिय ।
धडहड तउ घडि कमधज्ज धरातलि धगडायण धूम धरइ ।
ईडरवइ पडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ ॥ छ ५८

युद्ध वणन

उल्लालवि भालवि अज्झ कमालहु लय बधि सोधि लडत ।
धारक्कटि धारि धगड धर धसमसि धसमसि धुन्ध पडत ।
कमधज्ज त्रदयगिरि मडण सविना झलमल मल्ल भिडन्त ।
धुरि धसि धसि धूम धरइ धगडायगि धरधरि रण्ड रुलन्त ॥ छ ५३

यवन सैन्य पलायन

जि बुम्बाम बुम्बा उत्तबिक सनजिर जि बक्रि बहुक्रि लहुक्रि चमक्कि ।
नि चल्ली सुरङ्गी तरङ्गि पडन्ता रणमल्ल न्टिठेण दीठा दडन्ता ॥
जि मुद्दा समुद्दा सना रद्द सद्दा जि बुम्बाल चुम्बाल बगाल बन्दा ।

रणमल्ल छंद

जि जुज्झार मुक्तार न माल मुड़िय, रणमल्ल सिंह ते ठाम चुक्कि ॥
जि रावत मन्निवर बसकुरा बजाड़ो, जि जुद्धा मुहुद्दा सनद्धा भजाड़ो ।
तिभूमा सांईया पड़ी दड़ विजि रणमल्ल सिंह मुहि घाम लिज्जि ॥
जि मबरा भरवरा सरवरा बहन्ता जि सन्ना सम भरभ्भा सहन्ता ।
जि जुज्भार सज्जार हज्जार घल्लि रणमल्ल सिंह मुहि घाम घल्लि ॥
॥ ६६ ६७, ६८, ६६

उपसंहार

रणमल्ल छन्द तत्कालीन ऐतिहासिक तथ्यों पर सम्यक प्रकाश डालता है। यह मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा लज्जावश अथवा अन्य किन्हीं कारणों से छुपाई हुई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का पूर्ण परिचय देता है। इसके द्वारा साहित्य की छन्द रूप विधा अधिक बलवती हुई है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से यह अपभ्रंश तथा आधुनिक आर्य भाषा (राजस्थानी गुजराती) शृंखला को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। साहित्य जगत इस कृति के एक सटीक संस्करण की बहुत समय से आवश्यकता अनुभूत कर रहा था, जिसे भा वि म शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर द्वारा मूर्तरूप दिया गया है।

इस कृति की अन्य प्रति नहीं मिलने के कारण गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित रा ब श्री केशवलाल ह ध्रुव के पाठ को आधारस्वरूप मानने के लिए विवश होना पड़ा है फिर भी पाठान्तों के अन्वय परम्परानुमोदित शैली शब्दार्थ तथा भावार्थ के द्वारा पाठकों को रचयिता के भावों तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है। छंद के मूल पाठ को टिप्पण म दे दिया गया है। इस प्रयत्न को सफल बनाने मे मुनि जिनविजय जी एव श्री हरिवल्लभ चु भायाणी के प्रोत्साहन, संस्था के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण पारीक के निर्देशन आचार्य श्री नरोत्तमदास स्वामी के सुझावों तथा श्री अगरचंद नाहटा, श्री सौभाग्यसिंह शेखावत एव श्री सूर्यशंकर पारीक के सहयोग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैं इन सभी महानुभावों का हृदय से आभार स्वीकार करता हू।

— *मूलचन्द 'प्राणेश'*

रणमल्ल छंद

मूल पाठ
पाठ भेद
और भावार्थ

आर्या

शंकर गुरु-गणनाथान्,
नत्वा वर-वीर-वृंद आरम्भे ।
कथयेऽहं रणमल्ल,
प्रतिमल्ल यवन-भूपस्य ॥ १ ॥

मैं (कवि श्रीधर) श्रेष्ठ वीरचरित्र के प्रारम्भ में भगवान शिव, गुरु (एवं) गणपति को नमस्कार करके यवन - राजा के प्रतिद्वंद्वी रणमल्ल का (चरित्र) वर्णन करता हूं ॥ १ ॥

छत्राधिप मद-हर्ता,
कर्ता कदनस्य समर-कर्तृणाम् ।
वीर जयश्री धर्ता,
रणमल्लो जयति भू-भर्ता ॥ २ ॥

युद्ध करने वालों का नाश करने वाले छत्रपतियों के दर्प को हरने वाले, वीरों की विजय श्री को धारण करने वाले पृथ्वी के पति रणमल्ल की जय हो ॥ २ ॥

यम-सदन प्रतिनीता,
सीता रमणेन दानवा स्फीता ।
अधुना कमधज मल्लो,
रणमल्लम् तत्र तान् नयति ॥ ३ ॥

सीता के पति रामचन्द्र ने विस्तार पाये हुए दानवों को यमलोक पहुंचाया था। अब उन (दानव स्वरूप यवनों) को राठौड़ वीर रणमल्ल वहां (यमलोक में) पहुंचाता है ॥ ३ ॥

पाठ भेद –

१. दीपक रसवृत छंद है। नाथ, भुवन।
२. कदन सबल कर्तानाम्।
३. सीता, दानवास्फीता।

हम्मीरेण त्वरित,
घरित सुरताण फोज सहरणम् ।
कुरुत इदानीमेको,
वरवीरस त्वेव रणमल्ल ॥ ४ ॥

(जिस प्रकार) हम्मीर ने शीघ्रतापूर्वक सुलतान की सेना का संहार किया (उसी प्रकार) इस समय एक मात्र वीर रणमल्ल ही करता है ॥ ४ ॥

दिल्लीपति परिभूतो
तद् दहशे दृश्यते च बाहुबलम् ।
शाकशल्ये रणमल्ले,
यमतुल्ये तिमिरलिङ्ग यत् ॥ ५ ॥

दिल्लीपति के पराभव में यम के समान तैमूरलंग में जो पराक्रम देखा गया था वही (पराक्रम) यवनों के लिए कण्टक रूप रणमल्ल में देखा जाता है ॥ ५ ॥

कति कारयन्ति भूपा,
भुवि यूपान् केऽपि वापिका कूपान् ।
एको ननु पुनरास्ते,
रणमल्लो घोरि कारयिता ॥ ६ ॥

कितने ही राजा पृथ्वी पर यज्ञस्तम्भ बनवाते हैं और कितने ही (राजा) बावडिया और कूप बनवाते हैं किन्तु (यवनों के लिए) घोरें बनवाने वाला एक रणमल्ल ही है ॥ ६ ॥

यदि न भवति रणमल्ल
प्रतिमल्ल पादशाह कटकानाम् ।
विक्रीयन्ते धगडैर,
बाजारे गुजरा - भूपा ॥ ७ ॥

यदि बादशाह की सेनाओं का प्रतिद्वंद्वी रणमल्ल न होता (तो) यवन गुजरात के राजाओं को बाजार में बेचते ॥ ७ ।

सुभट शतरति विकट,
पटु करटिघटाभिरुत्कट कटकम् ।

---

४ हमेरेण, सहरणे, कुरुते तदिदानी वर वीर स्त्वेक एव ।
५ परिहरणे तद्पे, सत्ले, लिङ्गे च ।
६ यूपा
७ X ।

सन्नटयति रणमल्लो,
रणभुवि का वैरिणा गणना ॥ ८ ॥

जो सेना, सैंकडो योद्धाओं के कारण विकट घोर (युद्ध में) दक्ष हाथियों के समूह से उन्मत्त है उसको भी रणमल्ल युद्धभूमि में घायल कर देता है। उसके लिए, युद्धभूमि में सामान्य शत्रुओं की क्या गिनती है ? ॥ ८ ॥

अनवरत भरत-रस,
सरसं सह रत-रस सम स्त्रीभि ।
वीर-रस सह वीरैर्
विलासयत्येष रणमल्ल ॥ ६ ॥

यह रणमल्ल रसिकों के साथ नव रसों को, स्त्रियों के साथ सुरत रस को तथा वीरों के साथ वीर रस को आमोद प्रमोद करवाता है ॥ ६ ॥

खल-कमला गुरु-हरण,
पर-वरण समर डम्बरारम्भे।
शिव शिव रणमल्लोऽय,
शकदल मद-मदनो जयति ॥ १० ॥

युद्ध के आरम्भ मे अपने श्रेष्ठ वीरों का निर्वाचन करने वाले, शत्रुओं की राज्यश्री का महान हरण करने वाले तथा शक - समूह को नष्ट करने वाले इस रणमल्ल की जय हो ॥ १० ॥

॥ चुप्पइ ॥

सतिरि सहस साहणवइ साहण,
गई अरदास पासि सुरताणह ।
कणगरु कोप लीध हरि हिंदू,
तु रणमल्ल इक्क नह वद्द ॥११॥

सतरह सहस्र सेनाधिपति क शासन से सुलतान के पास प्रार्थना की गई कि— हिन्दू (राजा) रणमल्ल ने धान्य का बहुत बडा (राजकीय) कोष लूट लिया है और वह अकेला (रणमल्ल) ही तुम्हारी सेवा करना स्वीकार नहीं करता है ॥ ११ ॥

---

८ सुभतटेरति, पट्टदा।

६ सुरतरस समरस सम, विससन् स एक एव।

१०-११ इन दोनो के बीच में यही श्लोक नर वीर पाठांतर से ११ की संख्या देकर पुन लिखा है।

११ शीर्षक चुप्पइ नहीं दिया गया है। साहणाव कणगरु किद्ध सिद्ध सह हिन्दू, तू।

पुण फुरमाण आण सुरताणइ (णी),
नहि रणमल्ल गणइ रणताणइ (णी)।
जिम हम्मीर वीर सिम्भरवइ,
तिम कमधज्ज मूछ मुहि मुरवइ ॥ १२ ॥

सुलतान के पास पुन फरमान आया कि—रणमल्ल युद्ध भय की परवाह नहीं करता है तथा जिस प्रकार सांभरपति (चौहान) हम्मीर (मूछों पर ताव दिया करता था उसी प्रकार) (यह) कमधज्ज वीर (रणमल्ल) मूछें मरोड़ता है ॥ १२ ॥

चचलि चडा चिहू दिसि चपइ,
थर थर थाणदार उर कपइ।
कमधज करि धरि लोह लहक्कइ,
विवहर वुवम वु वह वक्कइ ॥ १३ ॥

(जब यह रणमल्ल) घोडे पर सवार होकर चारों दिशाओं को दबाता है (तब) थानेदारो का हृदय थर थर कांपने लगता है और (यह) कमधज वीर हाथ में तलवार लेकर झपटता है (तो) यवन बुबम बुबम (तोबा-तोबा) करने लगते हैं ॥ १३ ॥

निसि खभाइच नयर उध्रक्कइ,
घू घळि घू स पडइ धूलक्कइ।
प्रह पुक्कार पडइ (पढइ) पट्टण तळि,
रे रणमल्ल धाडि जव सभळि ॥ १४ ॥

(यह) रणमल्ल सायकाल मे खभाइच नगर मे (प्रविष्ट होकर) हलचल उत्पन्न कर देता है, धु घले समय मे धूलका नामक नगर में (इसका) नगारे पर डका पडता है और प्रात काल के समय जब रणमल्ल डाकू के (आने का समाचार) सुनाई देता है (तब) पाटण की तलहटी मे पुकार मच जाती है ॥ १४ ॥

मुहुडा(सि)या मीर रहमाणी,
दाम हराम करइ सुरताणी।
माल हलाल खान खिजमत्ती,
तु रणमल्ल डक्क नह खित्ती ॥ १५ ॥

---

१२ पण, गणइ, हिम्मीर, समरविइ, कमधज मुछ मरवै।
१३ चडि चाउ द्दिसि चपि, थिर थिर, धरि, कपइ, लहक्किइ, बिवहरि बूव-बूव वहक्किइ।
१४ खभनयर उध्रकिइ घू घलि घु स पडीइ घुलक्किइ, पोकार पडिइ तव।
१५ मुहढासिया मीर रजाणी, करिइ, खजमत्ती तु, ए नह।

(इस रणमल्ल ने) अनेक यवन वीरों को पराजित कर दिया है और सुलतान के धन को नष्ट कर रहा है। (यह) खान के माल जायदाद को अपनी सपत्ति समझ रहा है तथा वह एक ही इस पृथ्वी पर तुम्हारी सेवा स्वीकार नहीं कर रहा है ॥ १५ ॥

इक रणमल्ल राय सुणि आलमि,
रहिउ हुई हैराण खु दाळम।
हेला लाखबद बुल्लावि,
लखि फुरमाण खान चल्लावि ॥ १६ ॥

समग्र जगत मे एकमात्र राजा रणमल्ल को (स्वतन्त्र) सुन कर बादशाह आश्चर्यचकित हो गया। उसने तत्काल कासिद को बुलवाया और उसे (अपना) फरमान देकर खान के पास भेजा ॥ १६ ॥

हय गय कटक थाट उल्लट्टिय,
दहु दिसि पङरवेस पलट्टिय।
निहुटी वाटि काढ गढ घल्लि,
करुपराण रैयत रणमल्लि ॥ १७ ॥

(फरमान में उल्लेख था कि) रणमल्ल की रैयत पर दशों दिशाओं मे यवन सैन्य अश्वदल एवं हस्तीदल भेज कर आक्रमण करो और गढ का गुप्त मार्ग खोज कर उसे नष्ट कर दो ॥ १७ ॥

ईडर भणी भीच सुरताणी,
फू फू कार फिरई रहमानी।
मू गल मेच्छ मुहइ मच्छर भरि,
हसि हुसियार हुया हल-हल करि ॥ १८ ॥

(इस प्रकार का आदेशपत्र प्राप्त करके) सुलतान के यवन वीर फुफकारते हुए ईडर को लक्ष्य बनाकर (इधर उधर) घूमने लगे और कई मुगल जातीय यवन मात्सर्यभाव युक्त मु ह से हसते हुए सावधान हुए तथा चलो चलो करने लगे ॥ १८ ॥

॥ सारसी ॥

फू गराई फू फू फार फारक फौज फरि फुरमाणिया।
हुकार करकडो करइ सर झडि करवि करि कम्माणिया।

---

१६ आलम हैहराण रहिउ खू दाळम, हेलग्र, बोलावीय, चल्लावीय।
१७ दहु, नहुटि, घल्लिउ, रैयति करु पराण रणमल्लह।
१८ सुरताणी य, फिरिय, रहमाणी य, मु गल मु ह मिच्छ मछर, हुसीयार होया।

फुरणारि मीर मलिक्क मुफरद मूछ मरडी मच्छरइ।
सचरइ सक सुरताण साहण मारसी सवि सगरइ ॥ १६ ॥

यवन सैन्य में मलकाधिपति की फहराती हुई बहुत सी ध्वजाए और पुकारती हुई आज्ञाएं प्रसारित हुई। (जिनको सुनकर मलावीर) हुंकार करते हुए, हाथों में धनुष धारण करके शर वर्षा करने लगे। (कुछ) यवन सरदार मूछों पर ताव देते हुए अकेले ही मत्सरित होते लगे। (इस प्रकार) सुलतान की चतुर्विध चंचल सैन्य युद्धार्थ चली ॥ १९ ॥

॥ दूहा ॥

साहस वसि सुरताण दळ, समुहरि जिम चमकत।
तिम रणमल्लह रोम वसि मूछ सिहरि फुरकत ॥ २० ॥

शीघ्रता करने वाली सुलतान की सैन्य का प्रयाण ज्योंही प्रत्यक्ष हुआ, त्योंही रणमल्ल की मूछों के शिखर रोष के कारण फरकने लगे ॥ २० ॥

॥ सारसी ॥

फुरफुरहि लख अलख अंबरि नेज निकर निरंतर।
भरभरहि भेरि भयंक भूरर भरहि भूरि भयकर।
दडदडी दडदड कारि दडवड देति दिसि दिसि दडवडइ।
सचरइ सक सुरताण साहण साहसो सवि सगरइ ॥ २१ ॥

(जब) शक सुलतान की चतुर्विध चपल सैन्य युद्धार्थ चली (तब उसम) आकाश के अंदर छोटी बडी पताकाओं का समूह लगातार फहर रहा था। भेरी की भर भर करती हुई भयकर ध्वनि और दुडवडी की दड दड करती हुई ध्वनि देश की दसों दिशाओं में हो रही थी ॥ २१ ॥

॥ दूहा ॥

साहस वसि सुलतान दळ समुहरि जिम दमकन।
तिम तिम ईडर मिहर वरि, ढाल गहिर ढमकन ॥ २२ ॥

---

१९ छंद इतना ही दीपक है, नाम नही दिया गया है। फुरराय फुरफुर, वरि फुरमाणीया, बाण कर जडि, कमाणया, फुकारि, मलिक्र मुरडीय, मच्छरे, सचरिय, साहणसेन, शिव शिव सगर।

२० दीपक आर्या दिया हुआ है। समहरि जेम, तिम रणमल्ल मुछ।

२१ छद का नाम नही दिया गया है। निरतरा, भरभरहि, भयकरा दडवडाय दडवडकारि देस दवडिय दह दिशे, सचरिय, सेन शिव शिव सगर।

शीघ्रता करने वाली सुलतान की सैन्य का अग्र भाग ज्यों ज्यों स्पष्ट होता जा
था, त्यों त्यो ईडर के शिखर पर गंभीर ध्वनि से ढोल बज रहे थे ॥ २२ ॥

॥ सारसी ॥

ढम ढमइ ढम ढम कर ढ्कर ढोल ढोली जगिया।
सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरम रसि समरगिया।
कळकळहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थरथरइ।
सचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि सगरइ ॥२३॥

(जब) शक सुलतान की चतुर्विध चचल सैन्य युद्धार्थ चली, (तब उसके
र) ढोली जगी ढोलों को ढमाढम-ढमाढम बजा रहे थे। शहनाइयां युद्ध के स्वर
बज रही थीं। (उसके) अग्रभाग में स्थित युद्धरस सिक्त वीर प्रसन्न हो रहे थे
और) काहल की कर्कश ध्वनि तथा प्रत्यंचाओं की टंकारों से कोमल (हृदय) कायर
रहे थे ॥ २३ ॥

॥ दूहू ॥

जिम जिम लसकर उध्रमइ, करी नि बु बु कार।
तिम तिम रणमल्ल रोस भरि, तोलइ तरल तुखार ॥ २४ ॥

ज्यों ज्यों (सुलतान की) सेना नवीं नवी शब्दोच्चारण करते हुए (ईडर की
र) अग्रसर हो रही थी, त्यों त्यों सरोष रणमल्ल अपने घोड़े की जांच कर
ा था ॥ २४ ॥

॥ सारसी ॥

तुक्खार तार ततार तेजी तरल तिक्ख तुरगमा।
पक्खरिय पक्खर पवन पखी पसरि पसरि निरुप्पमा।

---

२२ शीपक शार्या दिया गया है। समहरि, चमकंति, सिहरतलि,
गुहिर ढमकंति।

२३ शीपक मे छंद का नाम नही दिया गया है। ढमढमोयकार, ढोली
जङ्गया, करहि समहरि ससर सर सरणाइयां, कलकलिहि कलि-
रव कमल कायर धूजए, सेन शिव शिव भंगरे।

२४ उध्रसिइ करि, रणमल्ल, तोलिइ।

असवार आसुर अंग असलीइ अराणिम असुहउ(ह) ईडरह ।
सचरइ सा सुरताण साहण साहसी सजि सगरइ ॥ २५ ॥

(जब) उस सुलतान की चतुर्विध यवन सैन्य युद्धार्थ चली, (तब उसमें) तार देश के तुखार और तत्तार देश के तेजी नामक यवन तथा तीक्ष्ण, कवचों से सुसज्जित एवं पवन के समान वेग वाले घोड़े थे। वे पक्षियों के समान उड़ रहे थे। (उन पर) ईडर के लिए अनुमानी यवनस्वरूप यवन सवार थे ॥ २५ ॥

॥ चुप्पइ ॥

हल ऐयार हकारयि वुल्लइ,
भुजबळि सबळ मुट्ठिदळ घल्लइ ।
गयु खान खुर नगतळि चल्लिय
सब्दळ दुहु दिसि दिद्ध डहल्लिय ॥ २६ ॥

खान स्वयं पहाड़ की तलहट्टी में गया। यवन सैन्य ने (ईडर के) दोनों ओर घेरा डाल दिया। (तदुपरांत) खान ने यवन ऐय्यारों को सम्बोधित करते हुए कहा—(वीरो !) मुट्ठी भर (ईडर की) सैन्य को अपने भुजबल से नष्ट कर दो ॥ २६ ॥

मलिक मत्र मज्झिम निसि किद्धउ,
तव हेजव फुरमाण स दिद्धउ ।
ईडरगढि असत्र चढि (डि) चल्लिउ,
जइ रणमल्ल पासि इम वुल्लिउ ॥ २७ ॥

(तत्पश्चात् खान ने) मलिक से मध्यरात्रि में मन्त्रणा की। (उसी के अनुसार) पत्रवाहक को आज्ञापत्र लिख कर दिया। (वह पत्रवाहक) अश्वारूढ होकर ईडरगढ़ की ओर चला और रणमल्ल के पास जाकर इस प्रकार कहने लगा ॥ २७ ॥

सिरि फुरमाण धम्मि सुरताणी,
हय गय (घर दय) हाल माल दीवाणी ।

---

२५ शीर्षक पर छंद का नाम नहीं दिया गया है। तोखार, तेजी य, तिख पष्परीय पष्पर पखि पसरीय पवन, असु लीय, ईडरे, सेन शिव शिव सगरे ।
२६ शीर्षक पर चुप्पई नहीं दिया गया है। वुल्लिइ, मु ठि, पदगतलि चल्लिय दहु दिसि, डहल्लीय ।
२७ अव ही चढि चल्लु, जई, बुल्लउ ।

अगर गरास दास सवि छोडिअ,
करि चाकरी खान कर जोडिअ ॥ २८ ॥

(हे रणमल्ल ! तुम) सुलतानी आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए वतमान-कालिक शासन, हाथी, घोडे, ग्राम, सेवक आदि सभी कुछ छोड कर (मात्र एक) खान की सेवा चाकरी करबद्ध होकर करो ॥ २८ ॥

रा असि सरिसु बाहु उठ भारिअ,
बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिअ ।
मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ,
तु गयणग(म)णि भाण न उग्गइ ॥ २९ ॥

राजा (रणमल्ल) की असि सहित विशाल भुजा आवेश के कारण तन गई । (उसने) दूत को सम्बोधित करते हुए कहा—(यदि) मेरा मस्तक रूपी कमल (उस) यवन के पैरों पर पडेगा तो गगनांगण में सूय उदित नही होगा ॥ २९ ॥

॥ सिंहविलोकित ॥

जा अवर पुड तळि तरणि रमइ,
ता कमधज कंध न यवड नमइ ।
वरि वडवानळ तण झाळ समइ,
पुण मेच्छ न आपू वास किमइ ॥ ३० ॥

जब तक गगनांगण में सूय क्रीडा करता रहेगा, तब तक (इस रणमल्ल) राठौर के स्कंध (उस) यवन के समक्ष नहीं झुकेंगे । भले ही वडवानल की लपटों का शमन हो जाय पर (मैं) किसी भी प्रकार से यवनों को पृथ्वी प्रदान नहीं करूंगा ॥३०॥

पुणु (पुण) रणरस जाण जरह जडी,
गुण सीगणी खची खती चडी ।
छत्तीस कुलह बल करिसि(सु) घणु,
पय मग्गिसि रा हम्मीर तणु ॥ ३१ ॥

(मैं) कहता हूं कि—(यदि) युद्धोन्मत्त होकर (क्षत्रिय वीरों ने) कवच

---

२८ सुरताणी य, दय दय, दीवाणी य, सव छोडिय, किरि जोडि य ।

२९ रा नहीं है । असिवर, उब्भारीय, बोलिई, हेजब्ब-हक्कारीय, सिरि, लग्गिइ उग्गिइ ।

३० दीपक पर छंद का नाम नहीं दिया गया है । तरणी तपिइ, नमिइ, वडवानल झाल शमिइ, तु मेच्छ किमिइ ।

३१ सीगणि पंचिम, छत्रीस, तणू मग्गिसि रा हम्मीर पणू ।

धारण कर लिए और (उनके) दा गणो
में (क्षत्रिय) अत्यधिक शक्ति लगा देंगे
और प्रमान करेंगे। अर्थात् जिस प्रकार
५
उसी प्रकार

विजयी
दिया था। अब (दु
(उसके) सत्तरह
मि

भा

मैंने युद्ध में
युद्ध में (पराङ्मुख होकर)
होगा, तब उसकी सेना (मुझे)
देखकर भय-भीत हो जाएगी ॥३३॥
मम मोहिय भ।

हूँ ॥
जब उठिसि हठि हवक
तब न गणू
मैंने युद्ध-सागर अनेक मलिकों को
यवनों को तितर बितर करने वाला (हो) हूँ।
(यह तो एक ही सुलतान है) मैं तीन-तीन
समझता ॥३४॥

३२ दपरसान जवे भग्गु धगिग गग्ग
३३ सम्मसनीन, यदि भग्गु मही, ॥
३४ (माहिम), मद रन,

वळ बुल्लिम वल्लि मलिक्क कहि,
मम वरणिसि मुण(।)सिम दुत मुहि।
जव चंपिसि ईडर सहरि तळ,
तव पेक्खिसि मुह रणमल्ल वळ ॥३५॥

(रणमल्ल ने) पुन इस प्रकार कहा—(हे दूत ! तुम) अपने सरक्षक मलिक से मेरा कथन उचित प्रकार से वर्णन कर देना। (साथ साथ यह भी कह देना कि) जब तुम ईडर की तलहट्टी को दबाओगे तब मुझ रणमल्ल के (वास्तविक) पराक्रम को देखोगे ॥३५॥

हय हेडवि सवि हेजव्व गया,
वहि वल्लि मलिक्क सलाम किया।
हिव करिसु धरा रणमल्ल मय,
इम बोल्लइ हठि तोलत हय ॥ ३६ ॥

सभी दूत अपने घोडों को चला कर गए। जाकर अपने सरक्षक मलिक को सलाम किया। (तत्पश्चात् बोले)—(खुदावद !) रणमल्ल (तो) अपने घोडे की जाच करता हुआ इस प्रकार कह रहा था कि—अब (अतिशीघ्र ही) समग्र पृथ्वी को रणमल्लमय कर दूगा। अर्थात् यवनो के शासन को समूल विनष्ट करके ही छोडूगा॥ ३६ ॥

नर केसरी ईडर सिहरि धणी,
जव हेजब मुहि फरियाद सुणी।
तव चमकि ढमक्कि मलिक्क करी,
धसि धाडिइ धायउ धूस धरी ॥ ३७ ॥

ईडरनगाधिपति नरकेशरी (रणमल्ल) का कथन जब (मलिक ने) दूत के मुह से सुना, तब वह अपने नक्कारों पर डका देकर (ईडर प्रदेश में) लूटने के लिए चल पडा ॥ ३७ ॥

॥ चुप्पइ ॥

पसरइ वडरवेस भयकर,
नर पोक्कारहि करहि निरतर।

---

३५ वोलि वहइ मनवरलिमि बरविसि बहुत मुहिइ, पेखिसि मू।
३६ गहवल्लि, बोलिइ।
३७ नुरकेसरि, सिहरतणी, फरीग्राद, टमक्कि, मलिकि, घसी, धायु धुस।

ह्यमर वेगि गया ईडर तळि,
सवि रणमल्ल करइ साहु सिहुलो ॥ ३८ ॥

भयत्रस्त यवन (लुटेरे) (ईडर प्रदेश में) फसने लगे। (उनके उत्पीडन से) प्रजाजन (त्रस्त होकर) निरंतर आर्त्तनाद करने लगे। (कुछ लोग) अश्ववेग से ईडर पहुँचे और रणमल्ल से सहायता की पुकार करने लगे ॥ ३८ ॥

विवडुर भरि वु बारव वज्जइ,
जळहर जिम मीगणि गुण गज्जइ।
बहु बलवाक करइ बाहुबळि,
घघळि घगड घरइ धरणी तळि ॥ ३९ ॥

(हे रणमल्ल !) यवन भरि तथा बु बारव बजाते हैं। (उनके) धनुषों की प्रत्यचाएं मेघ के समान गर्जन कर रही हैं। बहुत से बलवाक (बलख देशीय यवन) अपना बाहुबल प्रदर्शित कर रहे हैं। (इस प्रकार) उन्होंने पृथ्वी पर युद्ध मचा रखी है ॥ ३९ ॥

अरियण दारण ! दीन अभयकर,
पहरवेस यया निर्भय घर।
बभण बाळ बदि बहु किज्जइ
धा कमधज्ज धार करि लिज्जइ ॥ ४० ॥

हे शत्रु विदारक ! हे दीन अभयकारी ! इस भू भाग पर यवन बहुत ही निर्भय हो गए हैं। (उन्होंने) बहुत से ब्राह्मण एवं अबलाओं को बन्दी बना लिया है। हे कमधज ! (आप) चलिए (और) (उन यवनों से) युद्ध करके (ब्राह्मण एवं अबलाओं को) बंधन मुक्त कराइए ॥ ४० ॥

॥ पचचामर ॥

रउद्द सद्द आसमुद्द साहसिक्क सूरइ,
कठोर घोर घोर छोर पारसिक्क पूरइ।
ग्रहग गाम गेह गाहि गालिबाल किज्जइ
विछोहि जोइ तेह नाथ! मेच्छ लोडि लिज्जइ ॥ ४१ ॥

अत्याचारी यवन वीरों की शब्द ध्वनि समुद्र पर्यंत (प्रसारित) हो रही

---

३८ शीर्षक पर चुप्पइ नहीं दिया गया है। पसरीय, पोकार करिहिं, करइ सहसा हुळि।
३९ वज्जिइ, गज्जिइ, करिइ बाहुब्रलि, धू धडि धरिइ।
४० अरीयण शरण, यया नि मयकर किज्जिइ, धार धर लिज्जिइ।

है। निष्ठुर एव तस्कर पारस देशीय यवन (समग्र प्रदेश म) व्याप्त हो रहे हैं। (वे) यवन हमारे घर व ग्रामों को नष्ट कर रहे हैं। (अत) हे स्वामी ! (आप) (हमारे) वियोग को ध्यान म रखते हुए यवनों का मथन करके, उन (वदियों) को लौटा लाइए ॥ ४१ ॥

॥ दूहू ॥

जिम जिम कमधज चीतवइ, असपति सरिसु विवाद।
तिम तिम योगिनी रुहिर रसि, रत्ता करइ प्रसाद ॥४२॥

ज्यों ज्यों कमधज (रणमल्ल) बादशाह के साथ युद्ध करने का चिंतवन कर रहा था त्यों त्यों योगनियाँ मस्त होकर (पूव सचित) रुधिर से प्रसाद ग्रहण कर रही थीं ॥ ४२ ॥

॥ सारसी ॥

परसादि वक्षि दिगत योगिनि जय जयारव अबरि।
उछविक छविक दियत सिक्खा वीर धीर धरावरि।
दुद्दम्भ मेच्छ विछोह रोहम खोहि गाहवि किज्जइ।
तू हट्ठि उट्ठवणीइ हट्ठवि लोह हत्थ लिज्जइ ॥ ४३ ॥

दिग दिगतर की योगनियों को प्रसाद दीजिए। (ऐसा कहते हुए) (वे योगनिया) आकाश में जय जयकार करने लगी और अत्य त तृप्त होकर पृथ्वी के श्रेष्ठ वीर तथा धीर (रणमल्ल) को शिक्षा देने लगीं—(हे रणमल्ल) दुदम्य यवन क्षोभपूवक आक्रमण करके (प्रजा को) नष्ट कर रहे है। (अत) तुम (उन्हें) पराजित करने के लिए (अपने) हाथ म शस्त्र धारण करो ॥ ४३ ॥

॥ दूहू ॥

जिम जिम लसकर लोह रसि, लोडइ सासन, लक्खि।
ईडरवइ चउसइ चडइ, तिम तिम समरि कडक्खि ॥ ४४ ॥

---

४१ दीपक पर छद का नाम नही दिया गया है। रवइ, साहसीव सूरया, कठोर चोर छोर घोर पारसीक पूरया। अहड्ड गाम गाह गेय बाल-गाल बिज्जए, ताह तेह मेछ, लिज्जए।
४२ दीपक नहीं दिया गया है। चीतविइ करिइ।
४३ दीपक नही दिया गया है। प्रसाद लद्ध दियति उछविक उट्ठि, सिखा वीर धार धरातले, दुट्ठ मिछ छोहि जोह खोहि गाल्त किज्जए, निहट्ठि उट्ठि रच्छ उठण लोह हत्थि लिज्जिए।

ज्यों ज्यों सनिक समूह (भारे) शस्त्र बल से (यवन) राज्या के मथन का विचार कर रहा था, (उसे) जान कर त्यों-त्यों ईडराधिपति (रणमल्ल) की सहायतार्थ योगनियां कड़कती हुई चढ़ीं ॥ ४४ ॥

॥ पचचामर ॥

कडक्कि मू छ मीछ मेच्छ मल्ल मोलि मुग्गरि।
धमक्कि चल्लि रणमल्ल भल्ल फेरि सग्गरि।
धमक्कि धार छाडि धान छडि धाडि धग्गडा।
पडक्कि वाग्गि (वाटि) पक्कडत मारि मीर मक्कडा ॥ ४५ ॥

यवन सम्य में योद्धा कड़क रहे थ । रणमल्ल (अपने) भाले को घुमाता हुआ युद्ध के लिए चला। (उसके) शस्त्रों की धमक सुनकर यवन सैनिकों ने अन्न खाना और लूट-खसोट करना छोड़ दिया। (वह रणमल्ल) (उन) यवन सरदार रूपी मकड़ा को डंके की चोट पकड़ लेता था ॥४५॥

॥ चुप्पइ ॥

हय खुर तळ रणइ रवि छाहिउ,
समुहर भरि ईडरवइ आइउ ।
खान खवास खेलि वलि धायु,
ईडर अडर दुग्ग तळ गायु ॥ ४६ ॥

अश्व-पद रज से सूर्य आच्छादित होगया था। सेना के अग्रभाग में स्थित ईडराधिपति (रणमल्ल) आया। (उसने) खेल खेल में ही खवासखान को पकड़ लिया तथा (उसे) ईडर के अभेद्य दुर्ग की तलहट्टी मे पछाड़ा ॥४६॥

दम दम करि (कार) दमाम दमक्कइ,
ढम - ढम ढम - ढम ढोल ढमक्कइ।
तरवर पडरवेस पहट्टइ,
तर - तर तुरक पडइ तलहट्टइ ॥ ४७ ॥

---

४४ शीर्षक आर्या है। लोडि, लछि, ईडरवै चउ सिइ चडिउ,कडछि।
४५ शीर्षक पर छद का नाम नही दिया गया है। कडछि मु छ मोलि मल्ल मेछ भीछ मोगरे, रणमल्ल, सगरे, धडकि धार धाडि छोडि धान छोडि धू बडा, पवित चित पकडति मकडा।
४६ शीर्षक पर चुप्पइ नही दिया है। ताल, रेणी, तव समहर, आयु, तलिआयु।

दम-दम नाद करते हुए नगाड़े तथा ढम ढम शब्द करते हुए ढोल बज रहे थे। यवन (सैनिक) मैदान से ईडर की तलहट्टी में त्वरित गति से प्रवेश कर रहे थे ॥४७॥

विसर विरम वग रव पसरइ,
रहि रहिमान मनंतरि समरइ।
गह गुज्जारि निमाज कराणी,
हयमर फोज फिरइ सुरताणी ॥ ४८ ॥

कुरूप यवनों की बांग की विसर ध्वनि फैल रही थी। (वे) मन के अन्दर रहमान का स्मरण कर रहे थे। (उन्होंने) प्रार्थना स्वरूप नमाज पढ़ी (तब तक) सुल्तान की अश्वसेना घूम रही थी ॥ ४८ ॥

सत्तरि सहस सहिय सिल्लारह,
दहु दिसि फिरवि करि पुक्कारह।
सुहड मह सभळिवि रवद्दह,
घसमस धूस करइ मफरद्दह ॥ ४९ ॥

(सुलतान के) सत्तरह सहस्र योद्धा स्वरसाथ दसों दिशाओं में चिल्लाते हुए फिर रहे थे और (साथ ही) सुभट्टों के शब्दों को सुन कर (वे) अकेले अकेले धौंसा भी बजा रहे थे ॥४९॥

॥ हाढकी ॥

मद भीभळ सेरखचा वगाली मूगळ महामलिक।
ईडर मढर सिखरि रणथम्भरि तळि तरवरइ तुरक।
हक्कारवि विक्कट वहकटि चल्लइ बुल्लई विरद बहुत्त।
सुरताण मरिस सिल्लार सिपाही सवि मिळि समरि पुहुत्त ॥५०॥

मद विह्वल शेरखचा तथा बगाली यवन सरदार ईडर के ऊंचे शिखरों के मध्य तथा रणस्तम्भ के पास द्रुत वेग से आ रहे थे। (वे) विकट हुंकार करते हुए चल रहे थे तथा (साथ ही) अपने सुयश का बखान कर रहे थे। (इस प्रकार) सुलतान के समान ही सभी निर्भय योद्धा सम्मिलित होकर युद्ध स्थल पर पहुंचे ॥५०॥

---

४७ दमाम दमक्कीय, ढमक्कीय पडिइ तलहट्टीय।
४८ पसरीय, समरीय, कराणीय, फिरिइ सुरताणीय।
४९ सहीय, करिइ, रवद्द, हसमस हास करिइ।
५० शीर्षक नहीं दिया गया है। सीरखचा वगालीय, मुहा, अडर सिहर, तरवरीय, हकारवि विक्क, चल्लिय, बुल्लवि, मरिसु सवाहीय।

तळहट्टिइ मेल्लवि तरळ तुरक्की तार ततार तुरंग।
उल्लट्टिय असपति असणिम्र वायरि सायर वेलि तरंग।
हल हल विगरी विगरी बोलमिम्र नीर लहरि झिल्लत।
रण कंदळि कळह करइ किलवायण कायर नर रेलत ॥५१॥

ईडर की तलहट्टी में भिड़ने के लिए बादशाह के (सेनापति) तुरकी, तार और ततार देश के चपल घोड़ों को लेकर वायु व उराक्ष विद्युत एवं सागर में उत्पन्न तरंगों के समान उलट पड़े। (उस समय) हल हल तथा बिगरी बिगरी बोलते हुए (यवन) समुद्रीय तरंग के समान सुशोभित हो रहे थे। युद्ध भूमि में (उनके) युद्ध को देख कर कायर मनुष्य (उसमें) बह जाते थे। अर्थात् युद्ध विमुख होकर भाग जाते थे ॥५१॥

हेखारवि हयमर हसमसि खुररवि असणि किपाण कसत।
उल्लसवि कसाकसिम्र सितर विसि घसमसि धरणि घसत।
भू मंडळि भड कमधज मडोहडि भुजबळि भिडस भिडत।
रणमल्ल रणाकुल रणि रोसारुण मुणसत्तणि तु वरत ॥५२॥

(रणमल्ल की) मस्त मैं म के घवों की हुसमस, पदचाप और सत्तरवीसों (योद्धाओं) के वज्रतुल्य तलवार एवं कमरपट्ट कसने की धसमस से पृथ्वी धस रही थी। पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ वीर राठौर अपने चापल्यपूर्ण भुजबल से (यवन) योद्धाओं से भिड़ रहे थे। रण के लिए व्याकुल और रोष से संतप्त योद्धाओं को (उस युद्ध में) अप्सराएं वरण कर रही थीं ॥५२॥

उल्लाळवि भालवि जुज्झ कमालह लथबथि लोथि लडत।
धारक्कट धारि धमड धर धसमसि धसमसि धुब्ब पडत।
कमधज्ज उदयगिरि मंडण सविता झलमल मल्ल भिडत।
घुरि धसि धसि धू स धरइ धगडायणि धर वरि रुंड रळत ॥५३॥

रुण्डों के परस्पर लड़ते हुए और वेग के साथ परस्पर पकड़ने की क्रिया से युद्ध में आश्चर्य उत्पन्न होगया। शस्त्र प्रहार से कट कट कर पृथ्वी पर गिरते हुए यवनों की धसमस धसमस ध्वनि हो रही है। उदयाचल को सुशोभित करने वाले सूर्य की तरह प्रकाशमान राठौर योद्धा भिड़ रहे हैं। (वे) सर्वप्रथम (अपने) नक्कारों पर

---

५१ तलट्टिय मेळवि, तुरक्कीय, ऊलट्टिय, कायर, तरंग। बोलतीय, कंदळ, करिइ।
५२ खुररवि, हसमिसि, धसणि, नर नर वसि, भड रणमल्ल भिडस मिळत, तरव त।

इरा देते हैं, (तत्पश्चात् आक्रमण करके) यवनों के रुण्डों का धूलि में मिला देते हैं ॥५३॥

॥ चुप्पइ ॥

वर कमधज्ज वीर शासन छळि,
किति फुरइ नव खडि धरा तळि ।
असपति सरिसु इक्क ईडरवइ,
रणि रणमल्ल मूछमुहि मुखई ॥५४॥

श्रेष्ठ राठौर (रणमल्ल) की कीर्ति, वीर शासन के लिए पृथ्वी के नवखण्डों में प्रसारित हो रही है। (इस समय) बादशाह के समक्ष युद्ध में मात्र एक ईडराधिपति (रणमल्ल) ही (अपनी) मूंछों पर ताव द सकता है। अर्थात् सुलतान के समक्ष जाने का रणमल्ल को छोड़ कर अन्य किसी भी राजा का साहस ही नहीं होता है ॥५४॥

असुर अभग अग ईडर तळि,
असपति दळ कोलाहल सभळि।
बभण बाळ सुरहि अबला छळि,
हठि उठिउ कमधज भुजाबळि ॥ ५५ ॥

ईडर की तलहट्टी में सुलतान के अभग यवन सैनिकों का कोलाहल सुनकर ब्राह्मण बालक गायों और स्त्रियों की रक्षार्थ बाहुबली कमधज (रणमल्ल) उठा ॥५५॥

पक्खरि पक्खरैस भिड़तु
धसि धगडायण धूस धरतु ।
हणि हणि मुणसिम भणई असभम,
ताल मिलिउ हरि जभ तणउ जिम ॥ ५६ ॥

(वह) क्वचित यवनों से भिड़ता हुआ अथवा क्वचित घोड़े को पीड़ता हुआ और अपने नक्कारों पर डंका देता हुआ, यवन सैन्य में प्रविष्ट हुआ तथा मारो मारो कहता हुआ एवं धाभू धाभू उच्चारण करता हुआ जिस प्रकार भगवान जम्भासुर से भिड़े थे (उसी प्रकार) ईडर की तल०ट्टी में (यवन सैन्य से) भिड़ गया ॥ ५६ ॥

---

५३ भुक्र, लथि बथि, पडन्त, धार, धसमिसि धसमिसि, कमधज झलहल भिडन्त, धरि धरि धरि धूस धरि धगडायण ।

५४ शीषक पर चुप्पइ नहीं दिया गया है। वर हमीर वीर, फुरिइ, खण्ड, ईडरवि, मुछ निरखिइ ।

५५ अबल सुरही, कमधज ।

५६ पक्खर, धुस, हणि हणि भणि मुणस, मिल्यु हरि जम तणु ।

दुज्जण रुक्ख इक्क दावानळ हयमर,
हठि हेडवि कोलाहळि ।
रणवाउलु रणमल्ल रणाकुल,
असि रसि गाह करइ गोरी दळि ॥ ५७ ॥

रणोन्मत्त एव रणाकुल रणमल्ल (अपने) दावानल रूपी घोडे को शत्रुओं की ओर चला कर कोलाहल उत्पन्न करता हुआ तलवार से यवन स य को नष्ट करने लगा ॥ ५७ ॥

॥ दुमिला ॥

गोरी दळ गाहवि दिट्ठ दह दिसि गढि मढि गिरि गह्वरि गडिय ।
हण - हणि हक्कतउ हु हु हय हय हुकारवि हयमरि चडिय ।
धडहड तउ धडि कमधज्ज धरातळि धसि घगडायण धू स धरइ ।
ईडरवइ पडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ ॥ ५८ ॥

सभी ओर यवन सैनिकों द्वारा नष्ट किए हुए गढ मठ एव पर्वतों के अन्दर स्थित गढियों को देख कर रणमल्ल (अपने) घोडे पर चढा हुआ, मारो मारो की वीर हुक से (शत्रुओं को) ललकारने लगा । (तत्पश्चात्) नक्कारों पर डका देते हुए तीव्र वेग से यवन स य में प्रविष्ट हुआ और (वह) ईडराधिपति वीर रणमल्ल युद्ध म यवनो के साथ लडने लगा ॥ ५८ ॥

रोमचिय रण रसि (स) राढिऽरावण रहि रहि बल बोलत वळि ।
पक्खर वर पुट्ठि पवगम पट्ठिय पहुतउ पह पतसाह दळि ।
असि मारवि रूव रणायरि रगडिम भजइ धगड महा भडया ।
रणमल्ल रणगणि मोडि मिळता मेच्छायण मू गळ मु(मि)डिया ॥ ५९ ॥

वीर रणमल्ल युद्ध स रोमाचित होता हुआ और शत्रुओं को ठहरो ठहरो ललकारता हुआ घोडे की पीठ पर सु दर जीन कस कर बादशाह की सना मे पहुचा और अपनी तलवार की मार से पवतोपम यवनों को मदित करता हुआ (उन) विशाल यवन सुभट्टों को विनष्ट करने लगा । (इस प्रकार) (उसने) युद्धस्थल पर भिडते ही यवन [illegible] य के गज समूह अथवा यवनों को मर्दित करके मोड दिया ॥ ५९ ॥

---

५७ दुज्जण भुज्ज इक्क, कोलाहल करिइ ।
५८ दीपक नही दिया गया है । दह दिसि गढि गुहि गढिम् गहिय, *हणि हणि हक्क तु, धडहडतु धडि हम्मीर धु सि धरिइ, करिइ ।*
५९ रोमाच्चीय रण रसि रव रढि रावण, बोलत वळे, पखरव, पुहुतु दळे, मरि रवि, रणायर रगडय भज्जिइ, महा लडया मेच्छायण मोगर ।

मुहु उच्छळि मूछ मुहुच्छवि कच्छवि भूमइ मूछ समुच्छि लिया।
उल्लाळवि खग्ग करग्गि निरग्गळ गणइ तिणइ दळ अग्गलम्रा।
प्रलयकरि समरंरि लोहि छवच्छव छट करइ छत्तीस छळि।
रणमल्ल रणगणि राउत विलसइ रवितळि खित्तिय रोस वळि ॥ ६० ॥

(वह रणमल्ल) पुन उछलकर (शत्रुओं की) मुसगोमा स्वरूप मूछों को नाम्ता हुआ (स्वयं) अपनी मूछों को (सवारी हुई) लिए हुए घूम रहा है। (उसर) खड्ग प्रहार से हाथ कटे हुए (शत्रु) सेना के अग्रभाग में (पीड़ा से) कराह रहे है। (इस प्रकार) राउत रणमल्ल छत्तीस कुल के क्षत्रियों की रक्षार्थ युद्धस्थल की प्रलयकारी सेना में (भारी) रक्त की वर्षा करता हुआ, (इस) सूर्य के नीचे पृथ्वीतल पर अपने बल से विचरता है ॥ ६० ॥

सीचाणउ राकमधज्ज निरग्गळ झडपड चडग्गड घगड चिड़ा।
भडहृड करि सत्तिरिसहसभडक्कड्कमधजभुजभ(भ)टयायभ(भ)डा।
खत्ति तणि खय करि खरखर खू दिय खान मान खडत हुया।
रणमल्ल भयकर वीर विडाग्ग टोडरमलि टोडर जडिया ॥ ६१ ॥

कमधज राव रणमल्ल रूपी बाज की काटने वाली झडप से यवन रूपी चटकों में खुसर पुसर हो रही है। (वे) सतरह सहस्र यवन, कमधज वीर के बाहुबल रूपी झड़ी से भड़भड़ करते हुए चौंक उठते है। (इस प्रकार) पृथ्वी के क्षयकारी यवनों के विनष्ट हो जाने पर खान का गर्व खंडित होगया और भयकर वीरों को तितर बितर करने वाले वीर शिरोमणि रणमल्ल ने (अनेक) योद्धाओं को नष्ट कर दिया ॥ ६१ ॥

॥ छुप्पइ ॥

सोनगिरउ कहृड सिम्भरवइ,
वेढि करि गज्जणवइ असुरइ।
दहु दिसि दुज्जण दळ दावट्टिय,
सोमनाथ वड हत्थइ क्रट्टिय ॥ ६२ ॥

सोनगिरा चौहान कान्हड़देव ने गजनीपति यवन के साथ युद्ध करके सभी ओर

---

६० मूछ छळिमुछ मूदु छवि कछवि भ्र छरि मुछ समु छलया, गणि तमिङ्गळ अग्गलया, लय लय करि, लोह छव छरछन्छट करिइ छत्रीस छने, विलसिइ, रोसवसे।
६१ सीचाणु झडपिइ, भडक्कीइ खत्त त्तणि हयमर फाररवि खू दी खानमान खू दति हया, विडारीय, टोडरमल्ल।

के शत्रु स य को नष्ट करते हुए सोमनाथ की मूर्ति को अपने सबल हाथों से छीन लिया था ॥ ६२ ॥

आदर करि सक्कर थिर थप्पिय,
अचळ राज चहुआण समप्पिय ।
असपति सरिसु साह सिम वक्कइ,
मुरट मान रणमल्ल न मुक्कइ ॥ ६३ ॥

(तत्पश्चात् का हड्देव ने) आदर के साथ (उस) शक्कर की मूर्ति को पुन प्रतिष्ठित किया । (भगवान शंकर ने इस काय से प्रस न हाकर) चौहानों को अचल राज्य समर्पित किया । बादशाह से साह सिम कहने लगा—(सोनगिरा का हड्देव की तरह ही) रणमल्ल भी स्वाभिमान एव मर्यादा का परित्याग नही कर सकता है ॥६३॥

मरडी मूछ वडी मुहि मडइ
मेच्छ सरिसु गह गाह न छडइ ।
असवइ काळ किवाण करट्ठिय,
जा रणमल्ल रोस वसि उट्ठिय ॥ ६४ ॥

(उसका) मुह मरोडी हुई मूछो से सुशोभित हो रहा है । (वह) यवनों से बैर का परित्याग नही कर सकता । जब (रणमल्ल) रोषवश (युद्ध के लिये) उठता है (तब वह ऐसा प्रतीत होता है), (मानो) यमराज (अपने) हाथ में कृपाण धारण किए हों ॥ ६४ ॥

पडरवेम डरइ ममरि बाहुब्बळि
खग्ग ताल जिम तोलइ करतळि ।
दुज्जउ दड दुदभ दुहडइ,
इक्क अनेकि मलिक्क विहुडइ ॥ ६५ ॥

रणमल्ल जिस प्रकार युद्ध स्थल म करगत करवाल को तोलता है, (उस) बाहुबल के स्मरणमात्र से यवन भयभीत होने लगते है । (वह) दड का द्वितीय रूप

६२ दीपक पर चुप्पइ नही दिया गया है । सोनगिरी सतल सिंभर विइ वेगि करि असुरह गज्जणविइ, दहदिसि, दावट्ठी, चौथा चरण है ही नहीं ।
६३ राज क्कमधज्ज, मुक्किइ मूकइ ।
६४ मुरडि मुछ मुहवडी चडि मण्डीय, मेछ सरिसु द्रोह नवि छडिइ, असवे, करट्ठीय जोउ, उट्ठीय ।

रणमल्ल छद

तथा दुदम्य (गत्रुओं को) दंडित करके छोडता है। (वह) अकेला ही अनेक लिकों को नष्ट कर देता है ॥ ६५ ॥

॥ भुजगप्रयात ॥

जि बुधाअ बुधा उलक्कि सलक्कि,
जि बक्कि बहक्कि लहक्कि चमक्कि ।
जि चगी तुरगी तरगि चडता,
रणमल्ल दिट्ठेण दीन दहता ॥ ६६ ॥

(उसके भय से) जो नक्कारची है, (उनके) नक्कारे फिसल कर गिर पड़ते है, जो बडी बडी बातें करते हैं वे लहक मात्र से बहक जाते है और जो यवन सुंदर तथा अच्छे घोडो पर चढते थे (वे) रणमल्ल को देख कर (पैदल ही) नौ दो ग्यारह हो जाते है ॥ ६६ ॥

जि मुद्दास मुद्दा सदा रुद्द सद्दा,
जि बुबाळ चुबाळ बगाळ बदा ।
जि झुज्झार तुक्खार कम्माम्न मुक्कि,
रणमल्ल दिट्ठेण ते ठाम चुक्कि ॥ ६७ ॥

जो उग्गास, प्रस न चित्त और हमेगा रोनी आवाज वाले, नक्कारवद चबल और बगाल निवासी यवन योद्धा है (वे सभी) रणमल्ल को देखते ही तलवार एव घोडों को छोड देते हैं और स्थान भ्रष्ट हो जाते हैं ॥ ६७ ॥

जि रक्का मलिक्का बलक्का कपाडी,
जि जुद्धा मुदुद्धा सनद्धा भजाडी ।
तिभू आ खाडीआ घडी दड किज्जि,
रणमल्ल दिट्ठि मुहि घास लिज्जि ॥ ६८ ॥

जो अय्यार मलिक, बलख देश के, कापडी (इत्यादि यवन हैं), जो युद्ध मे मुर्दों को भी भगा देते हैं जिन्होंने घडियाल के डडे के समान चोट करके तीनों भवनों

६५ डरहि, खडग ताल तोलिइ यम हाथलि, उड्डुण्डिभ दूझ दुदम्भ दुहण्डिइ, एक अनेक, विहण्डिइ ।
६६ जि बुबे ॥ लबे उलक्के सलिक्किइ, जि बक्के बहक्के लहिक्के चमुक्किइ, जि चगे तुरगे तरगे चढता, रणमल्ल, मुडता ।
६७ यमुद्दा, वम्बाल, झुझार, तुखार मुक्किइ, ठामचुक्किइ ।
६८ रक्का, कि बुब्मा पहल्ला सनद्ध विभाडिइ, ति आखडी मूदण्डि वहु खडि किज्जिइ, रणमल्ल दिट्ठे मुहे घास घल्लिइ ।

को (अर्थात् सभी को) वशीभूत कर लिया है, व सभी यवन रणमल्ल को देखते ही मुंह मे घास ले लेते हैं ॥ ६८ ॥

जि ववका अरक्का सरक्का वहता
जि सब्बा सगब्बा झरब्बा सहता।
जि जुज्झार उज्झार हज्जार चल्लि,
रणमल्ल दिट्ठि मु हि घास घल्लि ॥ ६९ ॥

जिनके वचन तीक्ष्ण शर के समान चलते थे। जो सभी सगर्व प्रहारों को सहते थे। जो योद्धा हजारों लोगों को उजाड में चलने के लिए (विवश) कर देते थे, (वे स्वयं) रणमल्ल को देख कर मुंह मे घास दबा लेते हैं ॥६९॥

॥ छप्पय ॥

हिव किरमाळ पहारि धारगढ गाह्विं छड्डू।
कस लेकडी क्रिवाण पट्टि क्रिलवाणय खड्डू।
भुजबलि भल्लइ भिडिय भरी भय भडयचि पइसू।
घरीअ खभाइच्च असुर सिर चपवि वइसू।
प्रह ऊगमि पट्टणि पट्ट करि, धगडायण धधळि घरू।
ईडरवइ ग रणमल्ल कहि, इक्क छत्त रवि तळि करू ॥ ७० ॥

ईडराधिपति राव रणमल्ल कहता है कि—(मैं) अपने असिप्रहार से धारगढ के (यवनों को) नष्ट करके छोड़ूंगा। कवच और कृपाण बांध कर मुगलों के शासन को स्ववश कर लूंगा। हुलसगन भाल म भिड कर (यवनों म) भय का सचार करता हुआ भरोंच म प्रवेश करूंगा। खम्भाइच के यवन को अपने अधिकार में करके (उस) असुर के मस्तक को दबा कर ही चैन लूंगा। सूर्योदय के होते होते पट्टण को नष्ट करके (वहां की) यवन सेना म युद्ध मचा दूंगा। (इस प्रकार) समस्त पृथ्वी पर (अपना) एकाधिकार स्थापित कर लूंगा। अर्थात् समग्र देश से यवनों को मार कर भगा दूंगा ॥ ७० ॥

---

६९ वुवका, जि सद्दा सगद्दा जरद्दा सहता जि झझार उझार हझार चल्लिड, रणमल्ल दिट्ठं मुहे।
७० दीपक पर कविता है। पहरि, गाहिवि, करि, किलवाण ह्रं, भल्लि भिडीय, भयभरि भरूयचि पिसू, घरू म नम्रा छत्र, विमू, प्रहि, धू घळि, इडरवं, एगछत्र।

शब्द-कोष

अ

अग=मनिह
मगोअगी=परम्पर
अबर पुड तळि=माकाश मे
अवरि=आकाश मे
अगर प्रास=शासित ग्राम
मगह=मागे
मगलमा=मागे अगला
मचल=स्थिर
मडर=निभय
मनेकि=बहुत
अभग=वीर
मरक्का=मारा
मरदास=प्राथना
मस्सई=मश्व पर
मसणि=वज्र
मसणिम=वज्रस्वरूप
मसपति=बादशाह
मसलीह=विशुद्ध (खास)
मसिरसि=तलवार से
असुर=यवन
मसुहड=मशुभ
महग=युद्ध म हमारे ?

आ

माण=माया, आना
आ=ह होने
मादर=सत्कार
आपू=दू
आलमि=ससार म

इ

इक=एकाकी
इकछत=एकाधिकार
इम=इस प्रकार

उ

उज्जार=बिना माग के
उघसइ=मागे बढ रही थी
उरि=हृदय
उनकि सलकि=फिसल कर गि
पडन

ऐ

ऐयार=गुप्तचर बहुत बडा धूत औ
चाला

क

कध=स्कध
कटक=सेना
कठोर=निष्ठुर
कान्हड=कान्हड देव सोनगिरा
कमधज=राठोर
कमल=मस्तक, पुष्प
कम्माणिया=धनुष
कम्माल=तलवार, माश्चय
कम्मालह=मस्तक, माश्चय
कर=हाथ
करगि=हाथ
करतलि=हाथ मे
करि=हाथ म करके

कलरवि=ध्वनि से
कस=बांध कर
कसी=कमरबंद
कायर=डरपोक
काहल=एक युद्ध वाद्य
कित्ति=कीर्ति
किद्धउ=किया
कृपाण=तलवार
कृवाण=तलवार
किमइ=किसी भी प्रकार
किरमाल=तलवार
किलवायण=यवन सेना
कुमन=कोमल
कोस=खजाना
कोदि=प्रत्यंचा

ख

खति=लगनपूर्वक
खक्कर=यवन
खग=तलवार
खाडिम्रा=वशीभूत कर लिए
खिजमत्ती=सेवा
खित्ती=पृथ्वी
खित्तीय=पृथ्वी पर
खु दाळम=वीर बादशाह
खुं=स्वयं

ग

गज्जणवइ=गजनीपति
गढि=गढ़
गय=हाथी ऊंट
गयणंगणि=आकाश
गह=समय स्थान
गहगाह=वर
गहिर=गंभीर
गाम=ग्राम
गायु=पछाड़ा, मर्दन किया
गाह करइ=नष्ट करता है
गाहवि=नष्ट किए हुए
गुज्जार=प्रार्थना
गुण=धनुष की डोरी
गेह= =घर
गोरीदळि=यवन सेना

घ

घणु=बहुत
घल्लि=नष्ट करो

च

चंगि=अच्छे
चचलि=घोड़े पर
चपई=दबाता
चंपिसि=दबाया जायेगा
चउ=की
चमकिय=चमत्कृत करता हुआ भयभीत
चल्लावि=भेजा
चास=पृथ्वी
चिड़ा=चटक गोरया
चिहू=चारों
चुक्कि=चूक जाते हैं

छ

छलि=के लिए युद्ध

ज

जइ=आगर
जडिया=नष्ट किया
जरद्=कवच
जळहर=मेघ
जव=जब

जां=जबतक जब
जि=जो, जिनके
जिम–जिस प्रकार जसे
जुद्दा=युद्ध में

झ

झट्टिय=छीन लिया
झड़ाई=झपाटे से
झड़ा=प्रहार से
झटक्का=प्रहार
झाळ=लपट
झुज्झार=योद्धा
झुम्म=युद्ध

ट

टोडर=वीर
टोडरमलि=वीर शिरोमणि

ठ

ठाम=स्थान

ड

डहुलिय=घेरा

ढ

ढाली=एक गायक जाति

त

तणि=चालि की
तणु=का
ततार=एक यवन देश
तरणि=चपळ
तरणी=सूर्य
तरतर=शीघ्रता से
तरल=चपल
तरवर=शीघ्रता से
तळ=मल की
तनि=नसहगो में

ता=तब तक
तार=एक यवन देश
तिक्ख=तीखे बढिया
तिम=उसी प्रकार
तु=तुम्हें, तुम्हारी
तुक्खार=घोडा
तुरंगी=घोडा पर
ते=वे
तेजी=घोडा
तोलत=परीक्षा करता हुआ
तोलई=जाचता था
त्रण=तीन

थ

थप्पिय=स्थापित किया
थाट=समूह
थिर=स्थिर

द

दडवड=एक युद्ध वाद्य
दळ=सेना
दहु दिसि=दसों दिशाओं में
दाम=धन
दारुण=भयंकर
दावट्टिय=नष्ट करके
दास=सेवक
दिद्ध=दिया
दिद्ध=दिया
दिसि=दिशाओं म
दुज्जय=दुर्जय
दुज्जण=शत्रु
दुज्जण दळ=शत्रुओं की सेना
दुद्दम=दुर्दमनीय
दुहट्टइ=दहित करता है घुमता है

कलरवि=ध्वनि से
कस=बांध कर
कसी=कमरबंद
कायर=डरपोक
काहल=एक युद्ध वाद्य
कित्ति=कीर्ति
किद्धउ=किया
कियाण=तलवार
किवाण=तलवार
किमइ=किसी भी प्रकार
किरमाल=तलवार
किलवायण=यवन सेना
कुमर=कोमल
कोस=खजाना
कोहि=प्रत्यंचा

ख

खति=सम्मुख कर
खक्कर=यवन
खग=तलवार
खाहिया=वशीभूत कर लिए
खिजमत्ती=सेवा
खिती=पृथ्वी
खित्तीय=पृथ्वी पर
खुदालम=वीर बादशाह
खुर=खप

ग

गज्जणवइ=गजनीपति
गढि=गढ़
गय=हाथी ऊट
गयणगणि=आकाश
गह=समय स्थान
गहगाह=बैर
गहिर=गंभीर
गाम=ग्राम
गायु=पछाड़ा, मर्दन किया
गाह करइ=नष्ट करता है
गाहवि=नष्ट किए हुए
गुज्जार=प्रार्थना
गुण=धनुष की डोरी
गेह= =घर
गोरीदळि=यवन सेना

घ

घण=बहुत
घल्लि=नष्ट करो

च

चगि=अच्छे
चषलि=घोड़े पर
चपई=दबाता
चपिसि=दबाया जायेगा
चउ=की
चमकिय=चमत्कृत करता हुआ भयभीत
चल्लावि=भेजा
चास=पृथ्वी
चिडा=चटक गोरया
चिहू=चारों
चुक्किय=चूक जाते हैं

छ

छलि=के लिए युद्ध

ज

जइ=जाकर
जडिया=नष्ट किया
जरद=कवच
जलहर=मेघ
जय=जब

जां=जबतक जब
जि=जो, जिनके
जिम=जिस प्रकार जैसे
जुद्धा=युद्ध में

झ

झट्टिय=छीन लिया
झपटई=झपटने से
झटा=प्रहार से
झपट्टा=प्रहार
झाळ=लपट
झुझार=योद्धा
झुझ=युद्ध

ट

टोडर=वीर
टोडरमलि=वीर शिरोमणि

ठ

ठाम=स्थान

ड

डहुलिय=घेरा

ढ

ढोली=एक गायक जाति

त

तणि=शक्ति की
तणु=का
ततार=एक यवन देश
तरनि=चंचल
तरणी=सूर्य
तरतर=शीघ्रता से
तरप्प=चपल
तरवर=शीघ्रता से
तळ=नीचे को
तनि=तलहटी में
ता=तब तक
तार=एक यवन देश
तिक्ख=तीखे बढ़िया
तिम=उसी प्रकार
तु=तुम्हें, तुम्हारी
तुक्खार=घोड़ा
तुरगो=घोड़ा पर
ते=वे
त्रजी=घोड़ा
तालत=परीक्षा करता हुआ
तोलई=जांचता था
त्रण=तीन

थ

थप्पिय=स्थापित किया
थाट=समूह
थिर=स्थिर

द

दडवड=एक युद्ध वाद्य
दळ=सेना
दहु दिसि=दसों दिशाओं में
दाम=धन
दारुण=भयंकर
दावट्टिय=नष्ट करके
दास=सेवक
दिद्ध=दिया
दिद्धउ=दिया
दिसि=दिशाओं में
दुज्जउ=दुर्जय
दुज्जण=शत्रु
दुज्जण दळ=शत्रुओं की सेना
दुद्दम=दुर्दमनीय
दुद्दद=शब्द करता है घुमाता है

दुहुदिसि=दोनों दिशाओं में

ध

धधळि=धुंध
धगड=यवन
धगडायण=यवन सेना
धणी=स्वामी
धर=पृथ्वी
धरणितलि=पृथ्वी पर
धरवि=धारण करके
धरा=पृथ्वी
धरि=पकड़ कर
धरिय=पकड़ कर
धरित=घुमकर
धाडि=लुटेरा आवाज लूट
धाडिइ=लूट करने
धान=अन्न
धायउ=चला
धायु=पकड़ा, चला
धार=युद्ध शस्त्र
धारकरि=युद्ध करके शस्त्र चलाकर
धुंव=ध्वनि
धुरि=प्रथम
धुंस=नगाड़ा नगाड़े की ध्वनि

न

नइ=तथा
नग=पहाड़
नडी=स्वयंवर कर लिया था
नयर=नगर
नहु=नहीं
निकर=समूह
निभय=निर्भय
निरंतर=लगातार
निरगल=कटे हुए
निसि=रात्रि में
निहुटि=गुप्त

प

पइरवेस=यवन, घोड़ा
पइसू=प्रवेश करूंगा
पक्खर=यवन कवच
पक्खरि=कवचित
पट्टवरि=नष्ट करके
पडइ=गिरते थे, आक्रमण करते थे
पडविक=नगाड़ा
पद्धरि=नष्ट करके
पय=पद और (साभिप्राय)
पराण=चढ़ाई
पवगम—घोड़े की
पसरइ=फैलते हैं
पहु=राजा
पहट्टइ=चौक में
पहारि=प्रहार से
पहुत=पहुंचे
पासि=पास में
पुण=पुन
पुट्ठि=पीठ पर
पुणु=पुन कहता हूं
पेखिसी=देखेगा
पोकार=पुकार
प्रहि=प्रात काल में
प्रह उगमि=सूर्योदय के साथ

फ

फर फर=जल्दी-जल्दी
फरमाणियां=आज्ञाएं
फार=बहुत

फारक=ध्वजाए सैनिक
फुरमाण=फर्मान, आज्ञा-पत्र
फुगराइ=यवनपति

ब

बगरव=बाग की ध्वनि, बगालियों की ध्वनि
बमण=ब्राह्मण
बन्नि=कर
बदू=बदली करना
बक्कइ=पुकारते हैं कहता है
बक्का=वचन
बक्कि=बोलने वाले
बल=शक्ति को
बनकाक=यवन
बहिल=स्वामी संरक्षक
बाळ=स्त्रियां बालक
बाहु बलि=शक्ति का
बिबहर=यवन
बुका=नक्कारे
बुकाम=नक्कारचो
बुकारव=एक युद्ध-वाद्य
बुकळ=नक्कारे वाले
बुल्लइ=कहा कहते हैं
बुल्लिउ=बोला
बेवडी=कवच

भ

भग्गउ=भागा
भणइ=कहता हुआ
भरळि=ध्वनि
भल=भाला
भल्लइ=भाले से
भाण=सूप
भारिम=विशाल
भिडम=योद्धा
भीछ=वीर
भूछ=वीर
भूरि=अत्यधिक
भेरि=भेर (वाद्य)

म

मडइ=सुशोभित होता है
मडि=तत्पर
मन्त्र=सलाह
मयकडा=बदरों को यवनों को
मच्छर=मात्सय
मढि=देवस्थान
मदभीभळ=मद विह्वल
मफग्दूह=अकेल तनहा
मम=मैंने
मलिक=यवनों की अेक सम्मान जनक उपाधि सेनापति
मल्लमौलि=वीर शिरोमणि
मान=गव
मिइ=मेरे
मिळियउ=मिला
मीर=बहादुर यवन सरदार
मुक्कइ=छोड़ता है
मुग्गरि=सेना में
मुझ=मेरा
मुट्ठिदळ=थोड़ी-सी सेना
मुणमत्तणि=अप्सराए
मुणसि=कहता था
मुहा=प्रसन्न
मुद्दाम=उन्माम
मुफरद=अकेले तनहा

मुरट मान=स्वाभिमान
मुरवइ=मरोड़ता है
मुह=मुख
मुहडाया=परास्त कर दिये
मुंहि=मुंह से, मुंह, मुंह में
मह=पुन
मूंगळ=मुगल हाथी
मेच्छ=यवन
मेच्छायण=यवन सेन्य
मेछ=यवन

र

रउह=यवन
रउहह=यवनों का
रण ताळी=युद्धमय
रणमल्ल=योद्धा
रणवाउलु=रणोन्मत्त
रणाकुळ=रण के लिए व्यग्र
रणि=युद्ध में
रत्ता=अनुरक्त होकर
रवितळ=समस्त भू भाग में
रहमाणी=यवन
रहि=दास सेवक
रा=राजा
रावत=राजपूत एक उपाधि
राव्हिरावण=वीर
रामायण=युद्ध
रवरा=असवार, रवरा
रवग=तरफ
रुद्द=रौद्र रोने वाले
रुहिर=रुधिर
रूय=यवन
रेणइ=धूलि से
रोमवमि=गरीब
रोहग=आक्रमण करके घेरा डाल कर

ल

लखि=लाखों, देखकर
लखि=लिखकर
लसकरि=सेना
लहक्कइ=झपटता है
लाखबन्=कासिद पत्रवाहक
लाडि=मथन करके
लोथि=शव
लोह=शस्त्र
लोहि=शोणित

व

वडी=से
वर=श्रेष्ठ
वळ=पुन
वळि=पुन
वहि=चलकर
वागि=बजाकर
वाटि=मार्ग
वेगि=वेग से, शीघ्र
वेडि=युद्ध
वेलि-तरग=लहरों के समान
विडारण=तितर बितर करने वाला
विनडिसु=काबू कर लूंगा
विरग=कुष्ण यवन
विरद=सुयश
विवाद=युद्ध
विसर=बुरा
विहूडइ=भगा देता है ध्वस्त कर देता है

स

सकर=सोमनाथ महादेव
सगरइ=युद्धाय

सगरि=युद्ध मे
सचरीय=चली
सभळि=सुनाई देती है, सुन कर
सइ=सहायताय
सग्रा=सगव
सद्=शब्द
सद्दा=शब्दों वाले
सदा=हमेशा
सनद्धा=तत्पर
सब्बा=सभी
सम=समान
समप्पिय=दिया
समरि=योगनिया युद्ध म, स्मरण करके
समुहर=सेना का अग्रभाग
समुहरि=सेना के अग्रभाग म
सरक्का=शर के समान
सरणाई=शहनाई (युद्धवाद्य)
सरिस=समान
सरिसु=सक्रोध समान
सवि=सब
सविता=सूर्य
सायर=समुद्र
सासन=राज्य
साहण=चतुर्विध सैन्य, घोडा
साहणवइ=शासनाधिपति
साहु=एक उपाधि, सहायता
साहस=शीघ्रता करने वाला जल्दबाज
साहसिक्क=अत्याचारी
साहसी=चपल
सिम्भरवइ=चौहान (एक क्षत्रिय जाति)
सिक्खा=शिक्षा
सिरि=सिर पर, ऊपर
सिल्लार=योद्धा
सिल्लारह=वीरो को
सिहरि=शिखर, सिरा पहाड़ों म
सिहलो=आर्तनाद
सींगणी=धनुष
सीचाणउ=बाज पक्षी
सुपय=शासक को
सुर=स्वर, ध्वनि
सुरहि=गायो का
सुहड=सुभट्ट

ह

हक्कारिअ=सबोधन करके बुला कर
हत्थइ=हाथों स
हय=घोडा
हयखुर=अश्वपद
हयमर=घोडा
हयमर फौज=अश्व सैन्य
हयमरि=घोडे पर
हराम=नष्ट
हरि=हरण कर लिया
हलाल=स्वीकार्य
हसि=हसकर
हाल माल-दीवाणी=हुकूमत
हिव=अब, अभी
हुसिमार=सावधान
हेडवि=हाक कर
हेजब=दूत
हेला=पुकार करके
हैराण=चकित